बच्चों के लिए दो नाटक

बैंगन नहीं आए!

और

फँस गया पेचा!

उपासना

दीप्ति

एकलव्य

बच्चों के लिए दो नाटक

बैंगन नहीं आए!
और
फँस गया पेचा!

उपासना
दीप्ति

एकलव्य

भूमिका

इस किताब में शामिल नाटक **प्ले / राइट नामक ऑनलाइन प्लेराइटिंग रेज़िडेंसी कार्यक्रम** के लिए बनाए गए थे। इस कार्यक्रम की कल्पना थिंकआर्ट्स ने की थी और टाटा ट्रस्ट के पराग इनिशिएटिव ने इसे सहयोग दिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य था कि नाटककार छोटी उम्र के पाठकों के लिए लिखने के कार्य से जुड़ें और खास तौर पर उन्हें ध्यान में रखते हुए नाटकों की रचना करें।

हालाँकि पिछले कुछ दशकों में बच्चों के लिए बहुत-सा नया लेखन हुआ है जिसमें से काफी कुछ ऐसा भी है जिसे रंगमंच के लिए ढाला जा सकता है, लेकिन अभी भी छोटी उम्र के पाठकों के लिए लिखे जाने वाले नाटकों का अकाल है। प्ले / राइट कार्यक्रम की प्रेरणा हमें इसी हकीकत से मिली थी।

कोविड-19 महामारी ने ऑनलाइन माध्यम अपनाने के लिए हमें मजबूर कर दिया, और भौगोलिक सीमाओं के न होने से इस प्रोजेक्ट में ऑस्ट्रेलिया और भारत भर के विशेषज्ञों की भागीदारी हो सकी। चार रेज़िडेंट नाटककारों के अलावा प्ले / राइट कार्यक्रम में ऑस्ट्रेलियन नाटककार फिनेगन क्रुकमायर शामिल थे जो कार्यक्रम के लॉन्च वेबिनार में वक्ता की तरह और एक गहन मास्टर क्लास की अगुआई करने के लिए साथ आए। इसके अलावा, दो नाट्यशास्त्री (dramaturgs), भारत की शैली सत्यू व ऑस्ट्रेलिया की जेनिफर मैडवे भी साथ आईं जिन्होंने क्रमशः हिन्दी व अँग्रेज़ी में लिखने वाले रेज़िडेंट नाटककारों के लिए मेंटॉर की भूमिका निभाई। यह रेज़िडेंसी अप्रैल से अगस्त 2021 तक चली। इस दौरान, रेज़िडेंट नाटककारों ने व्यक्तिगत तौर पर पटकथाओं पर काम किया, एक ऑनलाइन मास्टर क्लास और एक वेबिनार में शिरकत की और नियमित रूप से अपने भाषा-सम्बन्धी मेंटॉर से सलाह-मशविरा किया।

फिनेगन क्रुकमायर एक पुरस्कृत ऑस्ट्रेलियन नाटककार हैं जिनसे छह महाद्वीपों में 98 नाटक करवाए गए हैं। उनके ये नाटक आठ भाषाओं में अनूदित हुए हैं। उनकी रचनाओं को 200 से भी अधिक अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में सिलसिलेवार दिखाने के मौके मिले हैं और 2018 में वे अमरीका में बाल रंगमंच की मौलिक रचनाओं के सबसे अधिक मंचित रचनाकार भी बने।

शैली सत्यू गिल्लो रेपर्टरी थियेटर की कलात्मक निर्देशक हैं। यह संस्था छोटी उम्र के दर्शकों के लिए रचे जाने वाले रंगमंच में विशेषज्ञता रखती है। शैली को संगीत नाटक अकादमी ने उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार से सम्मानित किया है, और उनके नेतृत्व में गिल्लो रेपर्टरी थियेटर ने भारत में 20 से ज़्यादा नाटकों का मंचन किया है, 500 से ज़्यादा शो आयोजित किए हैं और 1,10,000 बच्चों तक अपनी पहुँच बनाई है।

जेनिफर मैडवे 2017 से मेलबर्न थियेटर कम्पनी (MTC) की साहित्यिक सहयोगी (literary associate) हैं। वे बीते एक दशक से पेशेवर नाट्यशास्त्री रही हैं। इससे पहले वे तमाम दूसरी भूमिकाएँ निभाने के अलावा, ऑस्ट्रेलियन थियेटर फॉर यंग पीपल (ATYP) में रेज़िडेंट नाट्यशास्त्री (resident dramaturg) और नए नाटक विकसित करने वाली भूतपूर्व कम्पनी, प्लेराइटिंग ऑस्ट्रेलिया में पटकथा परामर्शदाता (script assessor) व नाट्यशास्त्री रही हैं।

एक ऐसी संस्था के रूप में, जो बच्चों और युवाओं के लिए कलाओं के साथ उच्च कोटि के जुड़ाव बनाने के मार्ग प्रस्तुत करने के लिए काम कर रही है, थिंकआर्ट्स इस उम्र के दर्शकों को रंगमंच के सार्थक अनुभव देने के लिए प्रयासरत है। यह ऐसा रंगमंच बनाने का प्रयास है जो इन युवाओं को ऐसे बुद्धिमान दर्शक या प्रतिभागी के रूप में देखता है जिनकी अनुभूति क्षमता और समझ बहुत गहरी हो सकती है। यह उन्हें कलाओं के सरलीकृत अनुभव प्रदान नहीं करता। बच्चों के लिए कलाओं के बेहतरीन अनुभवों को तैयार करने के लिए इस प्रक्रिया के दूसरे छोर से काम करने की ज़रूरत का भी ध्यान रखा गया है, यानी, प्रक्रिया के विभिन्न सृजनात्मक चरणों में शामिल कलाकारों, सक्रिय भागीदारों, लेखकों या निर्माताओं के साथ काम करना। इस तरह यह कम उम्र के दर्शकों के लिए रंगमंच को गढ़ने के कार्य में लगे हुए लेखकों के लिए अवसर पैदा करने, सहयोग प्रदान करने, मंच प्रस्तुत करने और उन्हें महत्व देते हुए आगे बढ़ाने का प्रयास भी है।

रंगमंच को गढ़ने की प्रक्रिया में लेखन भी एक पक्ष है और खास तौर पर सीमित आवाजाही व आत्मविश्लेषण के इस दौर के लिए यह बिलकुल उपयुक्त था। इसलिए प्ले / राइट ने भारत में छोटी उम्र के पाठकों के लिए नाटक लिखने के क्षेत्र में नई ऊर्जा भरने की कोशिश की।

नाटकों को पढ़ना किसी भी बच्चे के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। अपनी प्रकृति में ही नाटक पाठकों को निष्क्रिय न मानते हुए उन्हें सक्रिय सहभागी बनने पर मजबूर करते हैं। वे पाठकों की कल्पना-शक्ति, सहानुभूति, आलोचनात्मक सोच और नवाचार का इस्तेमाल करते हैं। पाठक को नाटक का पूरा अनुभव लेने के लिए, अपने दिमाग में, लिखे हुए नाटक के परिवेश और किरदारों की कल्पना करनी होती है, और इस अभ्यास के ज़रिए अपनी मानसिक प्रक्रियाओं को इस्तेमाल करना और उन्हें निखारना होता है।

नाटक के सुगमकर्ताओं के रूप में हमारे लिए यह चिन्ता की बात है कि साहित्य की एक विधा के रूप में नाटक लेखन से छोटी उम्र के कई पाठक परिचित नहीं हैं। थिंकआर्ट्स द्वारा किए गए एक सर्वे में यह पूछे जाने पर कि क्या उन्होंने कभी कोई नाटक 'पढ़ा' है, बड़ी संख्या में बच्चों ने 'ना' में जवाब दिया जो कि चिन्ताजनक बात है। यह वाकई एक

बड़ा नुकसान होगा यदि हमारे युवाओं को इस खूबसूरत कौशल की जानकारी ही न हो जो न सिर्फ लिखे हुए रूप में बल्कि मंच पर भी उपलब्ध होता है और जिसमें दृश्य व बोल दोनों शामिल होते हैं।

पराग इनिशिएटिव पिछले लगभग दो दशकों से बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण साहित्य विकसित करने पर ध्यान दे रहा है। 'नाटकों' की पहचान, एक महत्वपूर्ण शैली के रूप में और भारतीय बाल साहित्य के एक रिक्त क्षेत्र के रूप में करते हुए, नए नाटकों की रचना के लिए काम करना न सिर्फ आनन्ददायी रहा है बल्कि एक आवश्यकता-आधारित प्रयास भी रहा। इसके अलावा, यह नए नाटककारों को सहयोग देकर एक ऐसी जगह बनाने का प्रयास भी है जहाँ नई आवाज़ें उभर सकें। गुज़श्ता सालों में जहाँ लाइब्रेरी, लाइब्रेरी एजुकेटर, लेखकों, चित्रकारों और अच्छी किताबों के प्रति पराग की प्रतिबद्धता और मज़बूत हुई है, नाटकों के लेखन को सहयोग देना इस क्षेत्र के और अधिक संवर्धन की तरफ किया गया एक प्रयास है। एकलव्य द्वारा तीन भाषाओं – हिन्दी, अँग्रेज़ी और मराठी – में नाटकों को प्रकाशित करने के साथ हम आशा करते हैं कि एक व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचा जा सकेगा।

थिंकआर्ट्स, पराग और एकलव्य के आपसी सहयोग के माध्यम से इस प्रोजेक्ट को हकीकी रूप देने का मौका मिलना हमारे लिए आनन्ददायी और सम्माननीय बात है। हमारी टीम यह आशा करती है कि ये नए नाटक भारत भर के बच्चों व युवा पाठकों को पसन्द आएँगे, प्रतिभाशाली रंगमंच समूहों द्वारा इनकी प्रस्तुति की जाएगी और इससे लेखकों को बच्चों व किशोरों के लिए नाटक रचने के लिए प्रेरणा मिलेगी। और आखिरकार इस सबसे नाटक लिखने, नाटक पढ़ने, नाटक का मंचन करने और नाटक देखने का मज़बूत परिवेश बन सकेगा!

थिंकआर्ट्स व पराग
अनुवादः भरत त्रिपाठी

***

थिंकआट्र्स वेबिनार प्रस्तुति

फिनेगन क्रुकमायर

थिंकआट्र्स टीम, पैनल के साथी सदस्यों और जिन लोगों ने इसे देखा, उन सबका शुक्रिया – आपके लेखन प्रोजेक्ट के लिए शुभकामनाएँ!

एक लेखक होने से पहले, मैं एक पाठक था और सोचता था कि शब्द बाहर प्रेषित करने की नहीं बल्कि अन्दर समाने की चीज़ें हैं। मुझे जितनी जल्दी कहानियाँ मिलतीं, उतनी ही तेज़ी से मैं उनको चबा डालता था और इसीलिए मुझे बारिश के दिनों में भी उतना ही मज़ा मिलता था जितना खुले दिनों में। यह अच्छा रहा, क्योंकि मैं दक्षिणी आयरलैंड में पला-बढ़ा और वहाँ बारिश के दिन बहुत हुआ करते थे।

फिर जब मैं आठ साल का था, तो मेरा परिवार और मैं आधी दुनिया पार करके एडीलेड पहुँच गए और वहाँ नई ज़िन्दगी शुरू की। स्कूल नया था और दोस्त भी नए थे और सड़क के पार एक नया बगीचा था – और हम सारे स्थानीय बच्चे बाहर खूब खेलते थे। तो मुझे खुली धूप वाले दिन भी बारिश के दिनों जितने ही पसन्द आने लगे। लेकिन शब्दों से प्रेम सदा बना रहा।

कई बार उनका जादू मुझे दूसरे लोग उजागर करते थे – जैसे एक दिन किसी ने मुझे बताया कि RACECAR को उलटा लिखकर देखो कि क्या बनता है। बना RACECAR।

कभी-कभी जादू खुद ही सामने आ जाता था। जैसे, एक दिन मेरी पत्नी ने एक कार्ड दिया जिस पर लिखा था 'SEE LEAF FALL'। थोड़ी देर तक मैं उन शब्दों को घूरता रहा, जब तक कि वे गड्ड-मड्ड होकर यह नहीं कहने लगे: 'FEEL ALL SAFE'। और मैंने यही किया।

कई बार ऐसा होता है कि आप और आपका दोस्त एक ही समय पर हूबहू एक ही बात बोल पड़ते हैं, और फिर दोनों ज़ोर से हँस पड़ते हैं।

और कभी-कभी आप कोई किताब पढ़ते हैं, और देखते हैं कि दुनिया के बारे में कोई विचार वापस आपको समझाया जा रहा है, और कुछ इस तरह कि वह पूरी तरह समझ में आता है। दरअसल, आप जो देख रहे हैं वे कागज़ पर खिंची कुछ लकीरें भर हैं। और उन लकीरों को कुछ इस तरह जोड़ा गया है कि वे अक्षर बन जाती हैं, अक्षर शब्द बन जाते हैं और शब्द वाक्य। और लेखक की आप से कभी मुलाकात नहीं हुई है। लेकिन किसी तरह

से वे शब्द, वे अक्षर, स्याही की वे लकीरें, वे भूल जाते हैं कि वे इतने सरल हैं। बल्कि वे आपको किताब को गोद में रखकर कुर्सी पर सिर टिकाकर छत को निहारने और यह सोचने को उकसाते हैं: "हाँ, दुनिया ठीक ऐसी ही है"।

कुछ लोग कहानियों की ताकत से इतने भयभीत रहे हैं कि उन्होंने किताबें जला डालीं।

और कुछ अन्य लोग कहानियों की ताकत को लेकर इतने मुतमइन रहे हैं कि उन्होंने हज़ारों सालों तक उन्हें याद रखा। उन्होंने उन्हें कागज़-कलम के बगैर ही आगे बढ़ाया – दादा-दादी, नाना-नानी के मुँह से बच्चे के कानों तक – लिहाज़ा कुछ कहानियाँ उस वतन के आगे भी रहीं जिसमें वे पनपी थीं।

यह यकीन करना मुश्किल है कि किसी समय, शब्दों से पहले, किसी चीज़ का अस्तित्व होने के लिए उसे देखना ज़रूरी होता था ("मछलियों से भरपूर एक नदिया है")। और यदि आप चाहते कि कोई उस चीज़ के बारे में जाने तो उन्हें उस जगह ले जाना पड़ता और दिखाना पड़ता ("यह रही मछलियों से भरपूर नदिया")। लेकिन फिर आ गई भाषा, और यकायक आपके दिमाग में मौजूद तस्वीर को मीलों दूर ले जाकर किसी व्यक्ति से साझा करना सम्भव हो गया ("उन पहाड़ियों पर मछलियों से भरपूर एक नदिया है")। यकायक यह सम्भव हो गया कि हम सिर्फ उस चीज़ से अचम्भित न हों जिसे हम देखें (क्योंकि हर कोई तो हर जगह जाकर हर चीज़ को देख नहीं सकता)। बल्कि हम उन चीज़ों से भी अचम्भित हो सकते थे जिनकी कल्पना करने को हमें आमंत्रित किया जाए। हम दूर बैठ-बैठे भी अचम्भित हो सकते थे।

इन व इन जैसे हज़ारों अन्य कारणों से मैं पढ़ता हूँ और मैं लिखता हूँ। और कभी-कभी सिखाता भी हूँ। और जो मैं सिखाता हूँ, वह यह है कि यदि चाहे, तो कोई भी लेखक बन सकता है। करना सिर्फ इतना होगा कि वह शब्दों से प्रेम करे, कहानियों से प्रेम करे और तय करे कि जो कहानियाँ वह पढ़ते रहे हैं, वे अच्छी हैं लेकिन धीरे-धीरे एक कहानी उनके दिमाग में भी आकार ले रही है जो उन्हें किसी किताब में नहीं मिली है। यदि ऐसा होता है, तो यह उनकी बारी – आपकी बारी – है उसे लिख डालने की और उन शब्दों को अन्य से साझा करने की। क्योंकि शब्दों के बारे में यही सबसे बढ़िया बात है – वे साझा करने के लिए मुफीद हैं।

***

और कहना न होगा कि आज साझा करने की क्रिया, जुड़ने की क्रिया किसी भी वक्त से ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

अधिकांश दुनिया में आज हालात चिन्ताजनक हैं और दाँव पर बहुत कुछ लगा है। लेकिन मुझे यकीन है कि कुछ चीज़ें टिकी रहती हैं। और विचार ऐसी ही एक चीज़ है। कला भी इन चीज़ों में से एक है।

क्योंकि किसी कहानी, जो अजीब जादू वह होती है, का आविष्कार कोई भी व्यक्ति कर सकता है। इसके लिए बहुत कम पैसे और थोड़े से साधनों की ज़रूरत होती है। कहानी मुश्किलों या उम्मीद से जन्म ले सकती है, हज़ारों पाठकों के लिए लिखी जा सकती है या किसी एक खास व्यक्ति के लिए या सिर्फ और सिर्फ अकेले आपके लिए। हरेक को अपनी कहानी कहने व लिखने का हक है, चाहे वे मुखर हों या शान्त, जवान हों या बूढ़े, अमीर हों या न हों – चाहे उनकी दुनिया किसी सागर की तरह विशाल हो या किसी टापू की तरह जानी-पहचानी।

और मैं मानता हूँ कि कहानी से लैस कोई युवा अन्ततः हर चीज़ को नया आकार दे सकता है – क्योंकि उनका अस्तित्व एक दहलीज़ पर होता है।

एक ओर तो वे उस परिवेश की पैदाइश हैं जिसमें वे पले-बढ़े हैं। उनमें अपने लोगों का डीएनए होता है, उस भूदृश्य की स्मृतियाँ हैं, अपने ज़माने के सदमे या नेमते हैं। वे सबसे युवा हैं और इसलिए कई लोगों के इतिहासों के सबसे आशाजनक अवतार हैं, एक ही व्यक्ति में, समय के इसी एक पल में।

लेकिन दूसरी ओर वे किसी नई चीज़ की कल्पना कर रहे होते हैं। वे उन खूबियों को पहचानने लगते हैं जो उन्हें अनूठा बनाती हैं। वे ऐसे अनुभवों पर विचार कर रहे होते हैं जो अब तक हुए नहीं हैं, जिन रास्तों पर वे अब तक चले नहीं हैं। वे एक ऐसी व्यक्ति की छवि गढ़ रहे हैं जो वे बन सकते हैं।

और मेरे लिए किसी युवा व्यक्ति की ताकत इसी द्वैत में है। उन्हें किसी जानी-पहचानी चीज़ ने ढाला है और वे उन तत्वों का उपयोग कुछ नया बनाने के लिए कर सकते हैं – सोचने, करने, दुनिया को देखने का और हमारे जाने और भुला दिए जाने के बाद जो दुनिया बनेगी उसे देखने का एक नया तरीका। एक मायने में वे अतीत के प्रति हमारी आस्था हैं और भविष्य की उम्मीदें हैं।

इसीलिए उनके लिए, उनके वर्तमान में कहानी लिखना इतने सम्मान की बात है।

***

इन कहानियों को प्रस्तुत करने में आम जद्दोजहद है कि मुद्दा-प्रेरित रचनाओं की शिक्षाप्रद प्रकृति से बचना, जिसे बच्चों के लिए इतना ज़रूरी मान लिया गया है, और उसकी बजाय

बाल-दर्शक के लिए अधिक ईमानदार व सम्मानजनक जुड़ाव विकसित करना। मैं नहीं चाहता कि मेरे श्रोता कोई सीख लें क्योंकि मैं शिक्षक नहीं हूँ। और मैं नहीं चाहता कि वे किसी खास आत्म-विश्लेषी यात्रा पर निकल पड़ें क्योंकि मैं कोई मनोवैज्ञानिक नहीं हूँ। मैं तो सिर्फ इतना चाहता हूँ कि वे एक मज़ेदार और चुनौतीपूर्ण कहानी से मुखातिब हों क्योंकि मैं कहानियाँ लिखता हूँ। और यदि वे कलात्मक दृष्टि से सन्तुष्ट महसूस करते हैं, और भावनात्मक दृष्टि से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं तथा अन्य लोगों के साथ बैठकर एक सामूहिक पल के हिस्से हैं, और बाद में अकेले बैठे-बैठे उनके पास निजी तौर पर याद करने को कुछ रहता है, तो मेरे खयाल में यही कला का मूल्य है, बच्चों के लिए भी और सबके लिए भी।

और जहाँ तक चाशनी चढ़ाने की बात है, तो मैं ऐसी कहानियाँ लिखना पसन्द करता हूँ जिनमें पात्र अपनी रफ्तार से चलते हैं। वे बच्चे हैं या नहीं, यह बात मेरे लिए प्रासंगिक नहीं है – इस कहानी में वे नायक हैं और उन्हें अपना नायकत्व साबित करने के लिए मेहनत करनी होगी। बाधाएँ सिर से ऊपर निकल जानी चाहिए। लक्ष्य दूर स्थित कोई चीज़ – कोई दूरस्थ कतरा – होनी चाहिए। तब बाधाओं को पार करना और लक्ष्य तक पहुँचना और भी सन्तोषदायक हो जाता है। मैं चाहूँगा कि मेरे नायक खुद को महान साबित करें: बच्चे हों या वयस्क, चाहे मेरे आविष्कार हों या मैंने अपनी पसन्द की कहानियों में उनके बारे में पढ़ा हो।

और रचना के बाहर भी मैं चाहूँगा कि बाल-श्रोताओं का सम्मान किया जाए। मैं चाहता हूँ कि वे एक ऐसे नाटक में शरीक हों जिसमें दाँव बहुत ऊँचे हैं और पात्र त्रि-आयामी हैं। तर्क करने, खुद को खपाने और जश्न मनाने तथा शोक मनाने की उनकी क्षमता का सम्मान किया जाना चाहिए।

***

और इस स्वरूप का वास्तविक आनन्द तो यह है कि थिएटर के लिए ज़्यादा कुछ नहीं लगता।

फिर भी हम सुनते रहते हैं कि कोई कहानी कहने के लिए विभिन्न प्रौद्योगिकियों का, महँगे उपकरणों का और अधुनातन प्रभावों का उपयोग किया जा सकता है। लेकिन जैसे ही हम उत्पाद की बजाय उत्पाद पहुँचाने के साधन का गुणगान करने की ठान लेते हैं, हम एक अलग ढंग से निवेश करने लगते हैं। मेरे खयाल में यह एक सरल से विश्वास पर टिका है:

जब हम एक पेचीदा जादू का खेल देखते हैं, तो हम तार वगैरह, उसके झूठ होने का सबूत तलाशते रहते हैं। लेकिन जब हम एक सरल कहानी सुनते हैं, तो हम रूपक की, उसकी सत्यता के प्रमाण की तलाश में रहते हैं। एक स्वरूप हमें शंकालु होने का न्यौता देता है और हमें गलत साबित करता है। दूसरा हमें आस्थावान बनाने को प्रेरित करता है, और फिर हमें सही साबित करता है।

जब कोई नाट्य प्रस्तुति, या समय का एक पल, या जीवन में कोई व्यक्ति हमें आश्वस्त करता है कि वह शानदार होगा, तो हम शंकालु हो जाते हैं – हम तो मानवता की, खामियों की तलाश में होते हैं। लेकिन जब कोई नाट्य प्रस्तुति, या समय का एक पल या जीवन में कोई व्यक्ति खाली हाथ आता है, हथेलियाँ फैलाए हुए, और कहता है: "मेरे पास कहने को मात्र एक कहानी है," तो हम और अधिक की कामना करेंगे।

तो साथ मिलकर हम एक खेल खेलते हैं, झूठ-मूठ विश्वास करने का। तब वस्तु, जिसे साझा किया जा रहा है, वह हमदर्दी होती है – किसी अजनबी देश में, किसी अजनबी के लिए उसी तरह महसूस करना जैसा आप अपने लिए करेंगे। अपने सुख-दुख के स्वरूपों को उनमें देखना, और उनकी सफलता की कामना करना क्योंकि तब आप स्वयं के बाह्यकृत संस्करण होंगे।

किसी थिएटर में यह जाने बगैर प्रवेश करते हुए कि वहाँ क्या होने वाला है, हम सब एक निर्जन वन में भटकते हैं, सुराग की तलाश में। जो कुछ हमें मिलता है, उसे कसकर पकड़ लेते हैं। जब चन्द सुराग मिल जाते हैं, तो हम उन्हें जोड़ते हैं। एक कहानी बनने लगती है, हमारे सामने भी और हमारे अन्दर भी।

***

और यही वह चीज़ है जो रंगमंच हमें देता है – एक इजाज़त यह मानने की कि दुनिया जादुई है, कि भावनाएँ हस्तान्तरणीय हैं, कि जो चीज़ मेरे लिए अद्‌भुत है, वह आपके लिए भी अद्‌भुत होगी।

और रंगमंच का स्पर्शनीय आनन्द यह है कि वह हमें इस अनुभव के लिए पास-पास बैठा देगा। किसी क्षण हम सब एक साथ हक्का-बक्का होकर निश्वास लेंगे, और कभी हम अपनी कुर्सी में और अपनी स्मृतियों में अकेले ही सिमट जाएँगे, और कभी-कभी किसी क्षण में हम कुछ महसूस नहीं करेंगे, और बाद में (शायद अगली रात बिस्तर में लेटे हुए) उस क्षण की गहराई की थाह लेंगे: वह छवि, हमारे अवचेतन से छनकर, किसी के प्रति जवाबदेही से परे, सिर्फ हमारे हाड़-मांस को समझ में आने योग्य।

और बतौर एक लेखक मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि क्या मुझे विचारों के चुक जाने का डर सताता है। लेकिन मुझे लगता है कि यह नामुमकिन है, कम से कम जब तक मैं अचम्भे से परे न हो जाऊँ – अपने आसपास की दुनिया और उसकी विचित्रताओं और उसकी उत्कृष्टताओं और उसकी त्रासदियों और उसकी फतहों से चकित रह जाने से परे न हो जाऊँ। तो जब तक ये चीज़ें मुझे मिलती रहेंगी, तब तक मैं इन्हें निगलता रहूँगा। मैं इन्हें अपने लिखे नाटकों में उड़ेलता रहूँगा। यहाँ वास्तविक चीज़ों की अलमारी से ली गई

कुछ प्रिय चीज़ें हैं, महज़ मुट्ठी भर – सबकी सब सच हैं, लेकिन सभी इतनी जादुई हैं कि किसी कहानी का हिस्सा हो सकती हैं:

एक मल्लाह है जो एक पर्ची को बोतल में डालकर उसे समन्दर में फेंक देता है। और जब सालों बाद वह दुनिया के किसी दूरस्थ हिस्से के बन्दरगाह पर पहुँचता है, तो वही उस बोतल को पाता है। यह झूठ नहीं है।

एक कीड़ा है जो हूबहू एक टहनी की तरह दिखता है, और एक दूसरा कीड़ा है जो पत्ती जैसा दिखता है। एक मनुष्य है जो ठीक वैसा दिखता है, जैसा उसका एक जीन चाहता है – जीन खुद के परिवहन हेतु किसी प्रजाति को एक नौका के रूप में ढालता है, ताकि वह यात्रा कर सके और जीता रहे। यह प्रजाति आप हैं। मैं हूँ। यह जीन महज़ एक जीन है।

एक व्यक्ति है, जो कोई भाषा बोलना एक हफ्ते में सीख सकता है। एक महिला है जो रूढ़ संख्याएँ किसी खेल की तरह याद रख सकती है। इन लोगों के पास जो दिमाग है उसे विकलांग कहते हैं। कैसी विसंगति है?

एक रिकॉर्ड प्लेयर है जो एक छोटी-सी चाभी वाली कार और उसकी छत पर लगे एक स्पीकर से ज़्यादा कुछ नहीं है। आप अपनी मनपसन्द रिकॉर्ड मंच पर रखते हैं और कार को उसके ऊपर रख देते हैं। उसके चकों के बीच एक सूई (स्टायलस) रिकॉर्ड के खाचों में होती है। और वह कार गोल-गोल चक्कर लगाती जाएगी और आपके लिए आपका गाना बजाएगी।

एक आदमी है जिसने एक बार एक विशाल कम्प्यूटर के खिलाफ शतरंज का खेल खेला था। कौन जीता? क्या फर्क पड़ता है – एक आदमी एक विशाल कम्प्यूटर के खिलाफ खेल रहा था।

एक इकोसिस्टम है जो हमें सम्हालने के लिए एकदम सही है। और यह एक संयोग है। या शायद ईश्वर है। अलबत्ता कारण जो भी हो, इकोसिस्टम है बहुत आलीशान।

एक महिला थी जिसने एक बस में अपनी सीट से हटने से इन्कार कर दिया था। एक जोड़ा था जो कुछ समय के लिए बिस्तर में लेटा रहा था। एक आदमी था जो ज़मीन पर पालथी मारकर बैठ गया था और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा। ये सब महज़ निश्चल रह रहे थे। लेकिन इसे एक हलचल कहा गया। हालाँकि कोई हिला तक नहीं था। विडम्बना ही है।

एक पत्रिका में एक फोटो-श्रृंखला है, जिसमें एक आदमी अपने बेटे का रोज़नामचा रखता है। जिस दिन उसके बेटे का जन्म हुआ था, फोटोग्राफर ने वयस्क जीन्स खरीदी और लड़के को घर ले गया, और उस पैंट पर लेटे एक शिशु का फोटो लिया। और हर साल लड़के की सालगिरह पर वह उसे उसी पैंट पर लिटाता और वही फोटो खींचता। तो कुछ सालों

में – जब उन फोटो को पास-पास रखा गया – आप उसे बढ़ते हुए देख सकते थे। अन्ततः लगभग 20 साल की उम्र में एक टॉपलेस, रोमिल आदमी का फोटो था जो अपने पिता द्वारा उसके लिए कई साल पहले खरीदे गए जीन्स पहने मुस्करा रहा था। और उस फोटो के कुछ महीनों बाद बेटे के साथ एक दुर्घटना हुई और वह मर गया। और श्रृंखला में आखिरी फोटो...एक खाली जीन्स का है।

एक मछली है जिसे अपने अण्डे ज़मीन पर देने होते हैं। वह अपने अन्दर से जानती है वसन्त के सबसे ऊँचे ज्वार की उस रात को, ठीक-ठीक उस लहर को – और उस एक लहर पर उसके लाखों सहोदर पानी पर से उड़ेंगे और अपने अण्डे देंगे। अण्डों के समूह को भी पता होगा समुद्र का समय, और चन्द्रमा का भी, और वे ठीक दो हफ्ते में तैयार होंगे जब वही लम्बी लहर लौटेगी। और एक साथ वे सब जन्म लेंगे, उस लहर पर सवार होंगे और तैरकर समुद्र में पहुँच जाएँगे। कमाल का जादू है यह।

और मेरे खयाल में यही अचम्भा है – एक दुनिया के कतरे, हमारे जीवन के लिए रूपक हैं, हमारी भावनाओं के लिए कसौटियाँ हैं। यह फेहरिस्त एक अनन्त सागर में नन्ही-सी बूँद है। यह अपने कुदरती परिवेश में कला नहीं है क्योंकि यह तो एक अस्तित्वमान चीज़ है, कुछ उपस्थित है। लेकिन जैसे ही इसका अर्थ-निरूपण किया जाता है, जिस क्षण इसे एक अवलोकन के तौर पर लिया जाता है, और बाहर मुक्त किया जाता है, जैसे कोई कहानी साझा की जाए, कोई नृत्य संयोजित किया जाए, कोई गीत लिपिबद्ध किया जाए, कोई जज़्बात उकसाया जाए, तब वह कला होती है।

और हो सकता है कि किसी विचार को साझा करने के लिए किसी चौंका देने वाले तरीके का उपयोग किया जाएगा। हो सकता है कि किसी विचार को पुष्ट करने के लिए दिल की धड़कन थामने वाला कारण दिया जाएगा। लेकिन अन्ततः जो चीज़ हमें जीत लेगी, वह है विचार – वह है चाभी वाली कार की परिक्रमा जो हमारा गाना बजाती है, लेटे हुए लड़के की लम्बी होती नाक, सुर्ख सेब, रोटी के चूरे की लकीर, खाली जीन्स, लौटती मछलियाँ...

वह है चुनौती, संघर्ष और नायिका की विजय...

वह है सुविचारित हृदय, सरल, कवितामय 'क्या', जो (सारे अलंकार हटाने के बाद भी) चमकेगा।

अनुवादः सुशील जोशी

***

बैंगन नहीं आए!

(नाटक)

उपासना

मेरी ज़िन्दगी की प्यारी नज़रों – चार्वी और अधिती – के लिए

– उपासना

पात्र-परिचय

मिट्ठू :	सात-आठ साल की बच्ची। चंचल और बातूनी। कक्षा तीन की विद्यार्थी।
नन्नु :	मिट्ठू की नानी। बुजुर्ग महिला। अनुशासनप्रिय। रिटायर्ड टीचर।
अम्मी :	मिट्ठू की माँ। किताबें पढ़ने की शौकीन।
अब्बू :	मिट्ठू के पिता। टीचर व एक अच्छे कुक।
मिस नायला :	पालतू बकरी।
फ़लफ़ी :	पालतू कुत्ता।
गैब्रियल, सुखमनी व पूनम :	मिट्ठू के दोस्त।

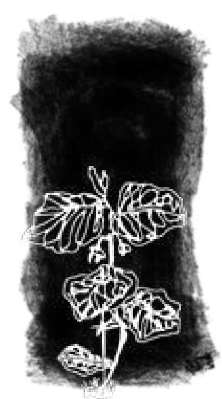

दृश्य-1

मंच पर प्रकाश होता है। आँगन का दृश्य है। शाम का वक्त है। आँगन में ढेर सारी सब्ज़ियों के पौधे करीने से गमलों में लगे हैं। मंच के एक कोने में अमरूद का पेड़ है। पेड़ के नीचे मिस नायला बँधी है। फ़्लफ़ी आँगन में इधर से उधर दौड़ रहा है। सात-आठ साल की बच्ची मिट्ठू का मंच पर प्रवेश होता है।

मिट्ठू : (हाथ जोड़कर सभी का अभिवादन करते हुए) नमस्ते! मेरा नाम मिट्ठू है। अब आप कहेंगे लो भई! मिट्ठू तो सुग्गे का नाम होता है। होता तो है वैसे। पर क्या हुआ कि जब मैं बहुत छोटी थी, तो खूब-खूब बातें करती थी। जो घर में थे उनसे और जो बाहर कहीं मिल जाते उनसे भी। दिन भर टें-टें-टें ही करती फिरती। नन्नु को मेरी यह आदत पसन्द नहीं थी।

नन्नु ने एक दिन कहा (नन्नु की नकल उतार रही है) कि तौबा! यह लड़की तो दिन भर तोते की तरह बोलती रहती है...हैंऽऽऽजी!

बस, फिर क्या था...अम्मी ने मेरा नाम मिट्ठू ही रख दिया।

नन्नु के खास शौक दो ही हैं। एक पान और दूसरा अखबार। अखबार की एक-एक खबर, एक-एक विज्ञापन तक वे चाट जाती हैं। (मंच पर चहलकदमी करते हुए) हम सब उनके साथ उनके घर पर रहते हैं। हमारे साथ हमारा कुत्ता फ़्लफ़ी और हमारी बकरी मिस नायला हैं... और हैं हमारी बेमिसाल अम्मी।

(हाथ को अपने मुँह के पास लाकर इधर-उधर देखते हुए फुसफुसा रही है) आपको एक बात बताऊँ। मेरी अम्मी किताबी कीड़ा हैं। (सामान्य तरीके से) हर हफ्ते उनके हाथ में एक नई किताब होती है। अम्मी कहती हैं कि जैसे पेट के लिए रोटी ज़रूरी है, वैसे ही दिमाग के लिए किताबें ज़रूरी होती हैं।

वे अक्सर एक शेर कहती हैं:

इन किताबों ने बड़ा ज़ुल्म किया है मुझ पर
इनमें इक रम्ज़* है
जिस रम्ज़ का मारा हुआ ज़ेहन
मुज़्दा-ए-इशरत-ए-अंजाम नहीं पा सकता
ज़िन्दगी में कभी आराम नहीं पा सकता!

(यह शेर जॉन एलिया का है)

(दर्शकों से मुखातिब होते हुए) आपको बात समझ आई क्या? (कन्धे उचकाकर) मुझे तो उनकी यह बात पल्ले ही नहीं पड़ती। हाँ, अम्मी ने बस इतना समझाया कि किताबों में एक जादू होता है। इस जादू के चक्कर में अक्सर हमारी किचिन में दूध उफनकर स्लैब पर फैल जाता है। खैर! (लम्बी साँस लेकर)।

और अब्बू! मेरे अब्बू तो दुनिया के बेस्ट कुक हैं। इम्म... कितना यमी दालमखनी पकाते हैं। अब्बू के पसन्दीदा काम दो हैं...कुकिंग और गार्डनिंग। पिछले बसन्त में हमारा आँगन तरह-तरह के फूलों से भर गया था। सब्ज़ियों में सिर्फ भिण्डियाँ उगाई गई थीं। पर इस बार नन्नु ने कहा कि बहुत सारी सब्ज़ियाँ उगाएँगे। तो अब्बू, अम्मी, नन्नु और मैंने मिलकर कई सारी सब्ज़ियाँ रोपी हैं। धनिया, टमाटर, मूली, लौकी और बैंगन।

---

*जादू

बैंगन का तो एक मज़ेदार किस्सा है। सुनाती हूँ। पिछली छुट्टियों में हम सब मौसी के यहाँ गदग गए थे। गदग कर्नाटक राज्य का एक ज़िला है। वहाँ मैंने बैंगन के पकौड़े खाए – कुरकुरे और बहुत टेस्टी। तो मैंने अब्बू से कहकर इस बार बैंगन के पौधे भी रोपे हैं। अब तो लगभग सारी सब्ज़ियाँ फलने लगी हैं। पर (मायूसी से)...पता नहीं, बैंगन के पौधों पर फल ही नहीं आ रहे?

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

दृश्य–2

आँगन का दृश्य है। सुबह का समय है। अमरूद के पेड़ के नीचे मिस नायला बैठी है। आँगन में टमाटर, धनिया, मूली और बैंगन के पौधे हैं। मिस नायला से थोड़ी दूर दो कुर्सियाँ और एक मेज़ रखी है। एक कुर्सी पर नन्नु बैठी हैं। दूसरी कुर्सी पर अम्मी किताब पढ़ रही हैं। मेज़ पर पानदान खुला पड़ा है। नन्नु पान लगा रही हैं। अब्बू पौधों की निराई-गुड़ाई कर रहे हैं। मिट्‌ठू कविता गाती हुई मंच पर आती है। वह पौधों के पास घूम-घूमकर गा रही है।

मिट्‌ठू : धनिया तो हँस रही
टमाटर शरमाए
मूली भी खिल गई
पर, बैंगन नहीं आए
बैंगन नहीं आए, भई बैंगन नहीं आए!

मिस नायला : (मिट्‌ठू को गाते हुए देख रही है) में-में-में...तो मोहतरमा बैंगन का इन्तज़ार कर रही हैं!

मिट्‌ठू : (दोनों हाथ कमर पर रखकर) हाँ! हाँ! हाँ! कब से तो इन्तज़ार कर रही हूँ!

मिस नायला : (सिर हिलाकर) इन्तज़ार...में-में-में!
भला बैंगन का क्या इन्तज़ार?
बैंगन पटा है पूरे बाज़ार,
थैले उठाओ, रिक्शे बुलाओ,
मोल ले आओ हज़ार!
भला बैंगन का क्या इन्तज़ार?

मिट्ठू : (रूठकर) तुमने देखा नहीं? हम सबने कितनी मेहनत की है। बैंगन रोपे। क्यारियों में खाद दी। मैं तो रोज़ पौधों को पानी भी देती हूँ। (उदास होकर) पर...

बैंगन नहीं आए, भई बैंगन नहीं आए!

मिट्ठू : (कविता गाती हुई मंच पर चहलकदमी कर रही है)

धनिया तो हँस रही
टमाटर शरमाए
मूली भी खिल गई
पर, बैंगन नहीं आए
बैंगन नहीं आए, भई बैंगन नहीं आए!

(अम्मी किताब नीचे रख देती हैं। मिट्ठू को देखकर मुस्करा रही हैं। अब मिट्ठू अम्मी की कुर्सी के चारों ओर उछल-उछलकर गा रही है। अम्मी कुर्सी से उठकर मिट्ठू की नाक पकड़कर हँसते हुए।)

अम्मी : मिट्ठू के बैंगन नहीं आए, भई बैंगन नहीं आए!

मिट्ठू : (अम्मी के दुपट्टे में मुँह छुपाकर) कब आएँगे बैंगन अम्मी? कब आएँगे बैंगन?

अम्मी : (मिट्ठू को पुचकारते हुए) आ जाएँगे मिट्ठू! बैंगन आ जाएँगे!

मिट्ठू : (चिढ़कर) पर कब?

अम्मी : सूरज के आने का भी टाइम होता है
टाइम से पत्ते गिरते हैं
फूल भी खिलते हैं
घड़ी के दोनों काँटे भी टाइम से चलते हैं
टाइम से बैंगन भी आएँगे
टाइम से बैंगन भी आएँगे!

मिट्ठू :	(उदास-सी फिर से मंच पर चहलकदमी करते हुए कविता दोहरा रही है) धनिया तो हँस रही टमाटर शरमाए मूली भी खिल गई पर, बैंगन नहीं आए बैंगन नहीं आए, भई बैंगन नहीं आए! *(फिर अब्बू के पास चली आती है। अब्बू मिट्ठू को देखकर हँस रहे हैं। फिर काम करना रोक देते हैं। नन्नु भी हँस रही हैं।)*
अब्बू :	यह तो बड़ी मुश्किल है भई! अकेला बैंगन रास्ते में पीछे रह गया कहीं!
मिट्ठू :	हूँ...!
नन्नु :	(उकताए स्वर में) हैंऽऽऽजी! सब तो करके देख लिया। हैंऽऽऽजी! खाद-पानी दिया। बकरी की लीद भी उड़ेली। पौधों पर कीड़े नहीं लगने दिए। पता नहीं क्या बात है? हैंऽऽऽजी!
मिट्ठू :	बैंगन कैसे आएँगे अब्बू?
अब्बू :	(सोचने की मुद्रा बनाकर) यह तो सोचना पड़ेगा...वैसे एक तरकीब है।
नन्नु व मिट्ठू :	(एक साथ) क्या तरकीब है?
अब्बू :	हमारी अम्मा चावल धोकर पहला पानी फेंकती नहीं थीं, पौधों को देती थीं।
नन्नु :	(सरौता से सुपारी कतरते हुए) सो उससे क्या होगा? हैंऽऽऽजी!

अब्बू : (मुस्कराकर) पौधे सेहतमन्द होंगे। सेहतमन्द पौधे बैंगनों को जल्दी बुला लेंगे।

नन्नु : (लम्बी साँस भरकर) चलो! ठीक है, अब यह करके भी देख लेंगे। हैंऽऽऽजी!

(मिट्‌ठू खुश होकर ताली बजा रही है।)

अम्मी : (मोबाइल में टाइम देखते हुए) अरे बहुत वक्त हो गया, आइए सब लोग नाश्ता करते हैं।

(अम्मी उठकर कमरे में जा रही हैं। उनके पीछे-पीछे अन्य लोग भी कमरे मे जा रहे हैं।)

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

दृश्य–3

आँगन का दृश्य है। दोपहर का वक्त है। अमरूद के नीचे मिस नायला बैठी है। चारों बच्चे गोल घेरा बनाकर खड़े हैं।

सुखमनी : *(चारों के कन्धों पर बारी-बारी से हाथ रखते हुए गिन रही है)*

इस्की फिटिंग
फॉर फाइटिंग
लाइटिंग फिटिंग झाँ

(गिनती मिट्ठू के कन्धे पर खत्म होती है।)

सुखमनी : आउट

(मिट्ठू गोल घेरे से बाहर निकल गई। सुखमनी फिर से गिन रही है।)

इस्की फिटिंग
फॉर फाइटिंग
लाइटिंग फिटिंग झाँ

(गिनती गैब्रियल पर आती है।)

सुखमनी : आउट

(इस तरह गैब्रियल और सुखमनी भी घेरे से बाहर हो गए। आखिर में पूनम बचती है।)

मिट्ठू :	तो पूनम अब चोर है। हम सबको छिपना है।
गैब्रियल :	(पूनम से) तुम आँखें बन्द कर 25 तक गिनो। तब तक हम सब छिप जाएँगे।
सुखमनी :	(पूनम से मुस्कराकर) देखो चीटिंग नहीं करना। आँखें अच्छे से ढँक लो।
मिट्ठू :	(जैसे अचानक कुछ याद आया हो। सबसे मुखातिब होकर) ओ हाँ! देखो कोई भी पौधों की ओर नहीं जाना। उधर छिपना मना है। अगर पौधों को ज़रा भी नुकसान पहुँचा तो नन्नु बहुत गुस्सा करेंगी।
सुखमनी व पूनम :	पौधे? कौन से पौधे? कैसे पौधे?
मिट्ठू :	(खुश होकर) बहुत से पौधे हैं। देखोगे?
तीनों :	(एक साथ) हाँ, हाँ, चलो दिखाओ!
गैब्रियल :	ऐसा करते हैं। पहले पौधे देख लेते हैं। फिर खेलेंगे।
	(मिट्ठू उन तीनों को पौधों के पास लेकर जा रही है। वहाँ बहुत से पौधे हैं। बच्चे पौधों को देख रहे हैं। पूनम हरे धनिए के पौधे को सूँघती है।)
पूनम :	कितनी अच्छी खुशबू है ना!
सुखमनी :	(बैंगन के पौधों की ओर इशारा करते हुए) और ये...ये तो शायद बैंगन के पौधे हैं ना मिट्ठू!
मिट्ठू :	(थोड़ी उदास होकर) हाँ, बैंगन के ही पौधे हैं। पर पता नहीं, बैंगन पर फल क्यों नहीं आ रहे?
सुखमनी :	(बैंगन के पत्तों को छूते हुए) क्या तुम इन्हें रोज़ पानी देती हो?
मिट्ठू :	हाँ, हर रोज़ पानी देती हूँ।
पूनम :	और खाद दी थी?
मिट्ठू :	हाँ, नन्नु ने खाद भी दी थी।
	(बच्चे चुप हो जाते हैं। मिस नायला में-में-में कर रही है।)

गैब्रियल : (गैब्रियल मिट्ठू के पास आकर धीरे से) मैं एक बात बताऊँ?

मिट्ठू, पूनम व सुखमनी : (तीनों गैब्रियल की ओर देखते हुए) हाँ, हाँ, बताओ! बताओ!

गैब्रियल : (धीरे-धीरे बोलता है। मानो कोई राज़ की बात बता रहा हो) क्या तुम पौधों को म्यूजिक सुनाती हो?

मिट्ठू, पूनम व सुखमनी : (हैरानी से एक साथ) म्यूजिक???

गैब्रियल : पौधों को म्यूजिक सुनना बहुत पसन्द होता है। म्यूजिक सुनकर वे खुश होते हैं।

मिट्ठू : (उतावलेपन से) अच्छा सच्ची! ये तुम्हें किसने बताया?

गैब्रियल : मेरे दद्दू ने बताया था। मैं तो रोज़ अपने बगीचे में वॉयलिन की प्रैक्टिस करता हूँ।

मिट्ठू : बहुत बढ़िया! तो अब मैं भी कल से अपने पौधों को म्यूजिक सुनाऊँगी!

सुखमनी व पूनम : (दोनों एक साथ) बहुत हो गईं पौधों की बातें...चलो भी...अब खेलते हैं!

मिट्ठू : हाँ, हाँ, चलो खेलते हैं। चोर कौन था वैसे?

पूनम : चोर तो मैं बनी थी। मैं 25 तक गिनने जा रही हूँ। तुम लोग जल्दी-जल्दी छिप जाओ।

(पूनम अमरूद के नीचे हाथों से आँखें ढँककर गिनती गिन रही है। बाकी बच्चे इधर-उधर जाकर छिप गए। गिनती पूरी करके पूनम बच्चों को ढूँढ रही है। आँगन मे चारों ओर ढूँढती हुई स्टेज से बाहर जा रही है।)

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

दृश्य–4

आँगन का दृश्य है। सुबह-सुबह का वक्त है। मुर्गे के बाँग देने की आवाज़ आ रही है। अमरूद के नीचे मिस नायला बैठी है। बाँग की आवाज़ सुनकर वह सिर हिला रही है। खड़ी होती है। सिर झटककर बालटी में पानी पीने लगती है। नेपथ्य में अलार्म घड़ी की तेज़ आवाज़ आ रही है।

मिट्ठू : (हड़बड़ाकर, उनींदी आवाज़ में) ओहो! 6 बज गए। (जम्हाई लेती है) पौधों को म्यूजिक सुनाना है। गैब्रियल ने कहा था कि सुबह-सुबह का वक्त अच्छा होता है।

(फिर पानी के छींटे मारने की आवाज़। सारी ध्वनियाँ नेपथ्य से आ रही हैं। आँगन में फिलहाल मिस नायला दिख रही है। मिट्ठू स्टेज पर आ रही है। उसके हाथ में मोबाइल है। वह मिस नायला की ओर बढ़ रही है।)

मिट्ठू : (अँगड़ाई लेते हुए) गुड मॉर्निंग मिस नायला!

(मिस नायला धीरे से सिर हिला देती है।) क्या तुम्हारी बालटी में पानी है? या भर दूँ? (मिट्ठू बालटी में झाँकती है।) ओहो! पानी तो खत्म हो गया है।

(बालटी में पानी रखकर वह पौधों के पास जाकर कुर्सी पर बैठ जाती है। मोबाइल में कुछ ढूँढती है। दर्शकों से मुखातिब होते हुए बोल रही है।)

मेरे पास वॉयलिन नहीं है...और वैसे तो मुझे वॉयलिन बजानी आती भी नहीं...आपको कुछ अन्दाज़ा है कि पौधों को कैसा म्यूज़िक पसन्द आएगा?

(कुछ क्षण सोच रही है) अच्छा इसे देखती हूँ...(मोबाइल में प्ले करती है। धड़ाम-धड़ाम-सा कोई म्यूजिक बज उठता है। हड़बड़ाकर बन्द कर देती है।)

ओहो! ऐसा लगा कि कान के पर्दे ही चटक गए...(पौधों की ओर देखते हुए) ऐसे हल्ला-गुल्ला से तो पौधे बिचारे डर ही जाएँगे!

(अपने आप से) इसे बजाकर देखती हूँ। (बहुत ही मद्धिम और बोरिंग-सा म्यूजिक बजने लगता है। वह अजीब-सा चेहरा बनाकर दर्शकों की ओर देख रही है।) कितना बोरिंग है ना! यह तो बैंगन को रास्ते में ही सुला देगा! आपको क्या लगता है कि पौधों को कैसा म्यूजिक अच्छा लगेगा?

(कुछ क्षण फिर सोच रही है) वैसे अम्मी कहती हैं कि पौधों के लिए जैज़ म्यूजिक बेहतर होता है। जैज़ को चलाकर देखती हूँ। (कुछ देर म्यूजिक पर झूमती है। फिर दर्शकों से बोलती है) ये परफेक्ट है।

(मिस नायला में–में-में करती है। फिर बालटी से पानी पी रही है। जैज़ निरन्तर बज रहा है। मिट्ठू कभी पौधों के आसपास टहल रही है, तो कभी धीरे-धीरे पौधों की पत्तियाँ छू रही है।)

(नन्नु की आवाज़ अन्दर से आती है।)

नन्नु : मिट्ठू, ओ मिट्ठू...कहाँ हो तुम?

मिट्ठू : आँगन में हूँ नन्नु। अभी आई।

(मिट्ठू मोबाइल में म्यूजिक बन्द करती है और कमरे में जा रही है।)

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

दृश्य–5

सुबह का वक्त है। अब्बू पौधों के पास टहल रहे हैं। गमलों में सूखी पत्तियाँ चुनकर रख रहे हैं। नन्नु दो कप चाय लेकर आती हैं। एक कप अब्बू को थमाती हैं।

अब्बू : मुझसे कहा होता...आपने चाय क्यों बनाई?

नन्नु : कोई बात नहीं...आज मेरा मन था कि मैं ही चाय बनाऊँ!

(दोनों पौधों के पास खड़े होकर चाय पी रहे हैं।)

अब्बू : आपने बैंगन का पौधा देखा अभी?

नन्नु : बैंगन का पौधा?

अब्बू : हाँ...!

नन्नु : नहीं तो...क्यों?

अब्बू : (मुस्कराकर) आइए...आइए...देखिए ज़रा!

(दोनों बैंगन के पास जा रहे हैं।)

नन्नु : (हैरानी से) अरे! (फिर चहककर) तो आखिरकार मिट्ठू के बैंगन पर फूल आ ही गए!

अब्बू : (हँसते हुए) जी हाँ! और इकट्ठे 5-6 फूल आए हैं।

नन्नु : भई यह बात तो सबसे पहले मिट्ठू को बतानी चाहिए... हैंऽऽऽजी! मिट्ठू...ओ मिट्ठू!

(आवाज़ लगाती हुई मंच के दूसरे छोर पर कमरे की ओर बढ़ी जा रही हैं।)

अब्बू : वह लिटिल कुम्भकर्ण भला इतनी सुबह कहाँ उठती है जो आप उसे आवाज़ लगा रही हैं।

नन्नु : अरे नहीं, जी नहीं...पिछले हफ्ते भर से वह सुबह-सुबह उठकर अपने पौधों को म्यूजिक सुनाती है।

(नेपथ्य से आवाज़ें आ रही हैं। स्टेज पर सिर्फ अब्बू हैं जो पौधों को देख रहे हैं। कोने में नन्नु और मिट्ठू दिख रहे हैं।)

नन्नु : मिट्ठू! उठ जा लाडो...रोज़ तो सुबह जग जाती है, आज देर क्यों हुई?

मिट्ठू : (उनींदी आवाज़ में) नन्नु, मैं कल देर रात तक पढ़ती रही थी न...

नन्नु : (उत्साह से) अच्छा चल...चल तो, तुझे कुछ दिखाना है।

(दोनों स्टेज पर आते हैं। मिट्ठू आँखें मल रही है। अचानक उसकी नज़र बैंगन के पौधों पर पड़ती है। मिट्ठू खुशी से उछल पड़ती है। फ़्लफ़ी भौं-भौं करता आँगन में इधर-उधर दौड़ रहा है। मिस नायला खुशी से में-में-में कर रही है। मंच पर अम्मी का प्रवेश होता है।)

अम्मी : (झुँझलाकर) ओफ्फो...क्या हुआ है? सुबह-सुबह यहाँ इतना शोर क्यों हो रहा है?

मिट्ठू : (दौड़कर अम्मी को पकड़ लेती है) अम्मी, पता है...बैंगन के पौधों पर फूल आए हैं।

अम्मी : (आवाज़ में खुशगवार हैरत है) अच्छा! सच?

(मिट्ठू हाथ पकड़कर अम्मी को बैंगन के पौधों के पास ले जाती है। अम्मी घुटनों के बल झुककर देख रही हैं।)

अम्मी :	(गौर से देखते हुए) आखिरकार बैंगन पर फूल आ ही गए। लेकिन इन पर ऑर्गेनिक कीटनाशक छिड़कना होगा...वरना फूलों के गिर जाने का डर है।
	(अब्बू और नन्नु भी पास आ जाते हैं।)
नन्नु :	अरे कीटनाशक? वह तो स्टोर रूम में रखा पड़ा है।
अब्बू :	यह तो अच्छा है फिर, नेक काम में देर कैसी?
	(अब्बू मंच से चले जा रहे हैं। कुछ देर बाद वापस आ रहे हैं। चेहरे और बालों पर कपड़ा लपेटा हुआ है।)
अब्बू :	सब लोग भीतर चले जाइए! 4-5 घण्टे से पहले कोई आँगन में ना आए!
	(सब मंच से चले जाते हैं। अब्बू कीटनाशक छिड़क रहे हैं। नेपथ्य से कहीं फोन डायल करने और रिसीव होने की आवाज़ आती है।)
मिट्ठू :	हैलो गैब्रियल!
गैब्रियल :	हाँ मिट्ठू! कैसी हो?
मिट्ठू :	मैं ठीक हूँ! तुम्हें एक खुशखबरी देने के लिए फोन किया है।
गैब्रियल :	हाँ, हाँ, बोलो!
मिट्ठू :	पता है बैंगन के पौधों पर फूल खिले हैं।
गैब्रियल :	अरे वाह! देखा न...म्यूजिक का कमाल!
मिट्ठू :	(खुशी से) हाँ सचमुच, म्यूजिक ने तो कमाल कर दिया। पता है फूल बहुत सुन्दर हैं। बैंगनी फूलों के बीचोंबीच पीले बीज हैं। फूल सितारों जैसे दिख रहे हैं।
गैब्रियल :	फूलों का जो पीला हिस्सा है ना, बैंगन वहीं से आएँगे। उनमें छोटे-छोटे काँटे भी होते हैं।

(मिट्ठू फोन पर बात करते हुए आँगन के पास चली आती है और उचक-उचककर अब्बू को कीटनाशक छिड़कते हुए देख रही है और फोन पर बात भी कर रही है।)

मिट्ठू :	ओह अच्छा! अभी तो अब्बू पौधों पर कीटनाशक छिड़क रहे हैं।
गैब्रियल :	हाँ, कीटनाशक छिड़कने से पौधों पर कीड़े नहीं लगते हैं ना...!
मिट्ठू :	अच्छा बाय!
गैब्रियल :	बाय! अच्छा सुनो! सुनो मिट्ठू...!
मिट्ठू :	हाँ, बोलो! बोलो!
गैब्रियल :	कल इंटरस्कूल ड्रामा कम्पटीशन के लिए सेलेक्शन होगा। तुम क्या सोचती हो? ड्रामा के लिए नाम देना चाहिए?
मिट्ठू :	मैं तो पक्का ड्रामा में हिस्सा लूँगी!
गैब्रियल :	गुड...मैं भी हिस्सा लूँगा! अच्छा चलो, बाय-बाय!
मिट्ठू :	बाय-बाय!
अब्बू :	(मंच पर अब्बू अपने आप से बोलते हैं) लो भई, हो गया कीटनाशक का छिड़काव। अब चलकर हाथ-मुँह धो लेता हूँ।

(अब्बू सामान समेटकर कमरे में जा रहे हैं।)

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

दृश्य-6

दोपहर का वक्त है। ड्राइंग रूम का दृश्य है। मिट्ठू स्कूल ड्रेस में मंच पर आती है। बैग सोफे पर पटकते हुए।

मिट्ठू : (ऊँची आवाज़ में) अम्मी! ओ अम्मी!

अम्मी : (हाथ में बेलन लिए आती हैं) क्या हुआ? क्यों चिल्ला रही हो?

मिट्ठू : अम्मी पता है, हमारे स्कूल में नाट्य महोत्सव हो रहा है।

अम्मी : अच्छा, ये तो बढ़िया बात है। अब चलो कपड़े बदल लो। मैं खाना लगाती हूँ।

मिट्ठू : (थोड़ा ठुनकते हुए) अरे बाबा! मेरी बात तो सुनो!

अम्मी : (किचिन की तरफ जाते हुए रुक जाती हैं) अच्छा बोलो!

मिट्ठू : इस नाटक में बच्चों को अलग-अलग सब्ज़ियों का रोल करना है।

अम्मी : (हँसकर) सब्ज़ियों का! तब तो तुम पक्का आलू बनोगी।

मिट्ठू : नहीं ना!

अम्मी : नहीं? पर तुम्हें तो आलू बहुत पसन्द है!

मिट्ठू : लेकिन मुझे किसी और सब्ज़ी का रोल मिला है।

अम्मी : किसका?

मिट्ठू : गेस करो?

अम्मी :	टमाटर!
मिट्ठू :	ऊँहूँ!
अम्मी :	भिण्डी!
मिट्ठू :	ना-ना!
अम्मी :	(चिढ़कर) ओफ्फो! तब क्या भंटा बनोगी! (मिट्ठू हँसने लगती है।) अच्छा तो तुम्हें बैंगन का रोल मिला है। तब तो तुम्हें वैसे कपड़े भी बनवाने होंगे।
मिट्ठू :	हाँ अम्मी, वो तो बनवाने होंगे।
अम्मी :	जानती हो! मैंने भी अपने स्कूल में एक नाटक में हिस्सा लिया था।
मिट्ठू :	(हैरानी से) धत्त!
अम्मी :	सच्ची!
मिट्ठू :	कैसे? मतलब कहाँ? मतलब क्या?
अम्मी :	एक बच्ची और एक मच्छर की कहानी थी।
मिट्ठू :	तुम क्या बनी थी अम्मी?
अम्मी :	मैं तो मच्छर बनी थी!
मिट्ठू :	मच्छर!!! मच्छर क्यों?
अम्मी :	क्योंकि बच्ची तो मैं थी। बच्ची थी इसलिए पता था कि बच्ची होना कैसा लगता है। मैं मच्छर नहीं थी। तो महसूस करना चाहती थी कि मच्छर होना कैसा लगता है?
मिट्ठू :	कैसा था नाटक?
अम्मी :	अच्छा था। मुझे तो सब याद है (जैसे याद कर रही हों।)
अम्मी :	मैं मच्छर हूँ, मैं मच्छर हूँ सुन लो जी मैं मच्छर हूँ

जिसको काटूँ एक बार
हो जाता उसे बुखार!

(फिर अम्मी दूसरी तरफ जाकर बच्ची का अभिनय करती हैं।)

सुन ले मच्छर, सुन ले तू
कान लगाकर सुन ले तू
मैं छोटी-सी बच्ची हूँ
सबसे मिलकर रहती हूँ
साफ-सुथरा है मेरा घर
हवादार है मेरा घर!

(मिट्ठू ताली बजाकर हँस रही है।)

अम्मी : (मुस्कराते हुए) अच्छा है ना! नाटकों की तो यही खासियत है...जो हम नहीं हैं, वह बनकर यह महसूस कर सकते हैं कि वैसा होना कैसा होता है।

मिट्ठू : जैसा आपने मच्छर बनकर देखा था?

अम्मी : हम्म...और जैसे तुम बैंगन बनकर करोगी! वैसे मिट्ठू का यह बैंगन कहेगा क्या?

मिट्ठू : (आगे बढ़कर खड़ी होती है) बताती हूँ...

रास्ते में भटका था
फूलों में अटका था
लौटा हूँ टटका हूँ
टहनी से लटका हूँ
मिट्ठू का बैंगन मैं
गोल-मटोल मटका हूँ!

(अम्मी और मिट्ठू एक साथ हँस रहे हैं।)

मिट्ठू : कितना मज़ेदार है! तब तो आपने बहुत से नाटक किए होंगे, है ना अम्मी?

अम्मी : (उदासी से) अरे नहीं! बस वही एक नाटक कर पाई थी।

मिट्ठू : सिर्फ एक? (उँगली से इशारा करते हुए) लेकिन आपने और नाटक क्यों नहीं किए?

अम्मी : अब्बू-अम्मी को मेरा नाटकों में हिस्सा लेना पसन्द नहीं था।

मिट्ठू : नन्नु को पसन्द नहीं था? उन्होंने आपको नाटक नहीं करने दिए? मैं पूछूँगी नन्नु से कि उन्होंने आपको और नाटक क्यों नहीं करने दिए?

अम्मी : अरे! नहीं-नहीं बेटा! ये सब पुरानी बातें हैं! अब इन सब पर चर्चा करने से क्या फायदा?

मिट्ठू : अच्छा छोड़ो! नन्नु को नहीं पसन्द था, पर आपको तो नाटक करना पसन्द था ना! आपने क्यों नहीं किए?

अम्मी : (गहरी साँस खींचकर) इसकी परवाह भला कौन करता है कि बच्चों को क्या पसन्द है और क्या नापसन्द? (थोड़ी देर रुककर) अच्छा चलो-चलो, बहुत बातें हो गईं। अब चलकर खाना खा लो।

(दोनों आँगन से कमरे में जा रहे हैं।)

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

दृश्य–7

दोपहर बाद का वक्त है। आँगन का दृश्य है। अम्मी के एक हाथ में किताब है। दूसरे हाथ से वह मिस नायला के आगे घास रख रही हैं। नन्नु उठकर पौधों के पास टहल रही हैं।

नन्नु : हम्म...बैंगन तो वैसे अच्छे दिख रहे हैं...हैंऽऽऽजी!

अम्मी : (नन्नु की ओर मुड़कर) हाँ अम्मा, ठीक कहा आपने। देर आए पर दुरुस्त आए!

(अब्बू हाथ में चाय लिए आ रहे हैं। उनके पीछे-पीछे मिट्ठू अपना बैग लेकर आई है।)

अब्बू : (चाय का घूँट लेते हुए) तो, कुल कितने बैंगन आए हैं?

नन्नु : बैंगन तो शायद...

(नन्नु की बात अधूरी रह जाती है। मिट्ठू बीच में ही बोल पड़ती है।)

मिट्ठू : छह, पूरे छह बैंगन आए हैं अब्बू!

अब्बू : (हँसकर) अच्छा, तो गिन लिए तुमने!

(अम्मी और नन्नु भी हँस रही हैं।)

नन्नु : (कुर्सी पर बैठते हुए) भई, मैं तो कहूँगी भरवाँ बैंगन पकाए जाएँ। खासे ताज़े बैंगन हैं। हैंऽऽऽजी!

अब्बू : (हड़बड़ाहट से) आहा! खयाल तो ठीक है, लेकिन इनका भरवाँ जमेगा नहीं। भरवाँ के लिए लम्बे-पतले बैंगन सही होते हैं।

मिट्ठू : मैं बताऊँ नन्नु...

(मिट्ठू की बात बड़ों की बातचीत के शोर में दब जाती है।)

अम्मी : सही बात है। मैंने बहुत दिनों से प्लान कर रखा था कि दही-बैंगन पकाऊँगी।

नन्नु : (अम्मी को चिढ़ाते हुए उनकी नकल उतारती हैं) ऐंऽऽऽ! बड़ी आई, दही-बैंगन पकाऊँगी! पहले कभी बनाया है या यह भी तुम्हारे नासपीटे फूटा-ट्यूब और गुगली-मुगली आकर बताएँगे?

अम्मी : (नाराज़गी से) अम्मा...यूँ हमारा मज़ाक न उड़ाया कीजिए!

मिट्ठू : मेरी बात तो सुनिए...

अब्बू : (गला खखारकर) मैं यह कह रहा था कि क्यों न इनका अचारी-बैंगन बनाऊँ!

अम्मी : अचारी? पर उसके लिए बर्नी चाहिए होगी ना!

नन्नु : क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा! इतने थोड़े से बैंगन का अचारी भला क्या बनेगा? और बर्नी कहाँ है? हैंऽऽऽजी!

मिट्ठू : अब्बू...अब्बू बैंगन के ना...! (बात अधूरी रह जाती है।)

अब्बू : बर्नी का क्या है? वह तो कभी भी खरीदी जा सकती है।

नन्नु : जितने का बच्चा नहीं, उतने का झुनझुना! आखिर इतनी मशक्कत की ज़रूरत क्या है? हैंऽऽऽजी!

(सब आपस में बहस कर रहे हैं। मिट्ठू का चेहरा उदास दिख रहा है। वह मिस नायला के पास जाकर बैठ गई है। उसकी गर्दन से अपनी गर्दन सटा लेती है।)

अम्मी : तो आखिर किया क्या जाए?

नन्नु : अरे भई इतना क्या सोचना? थोड़े से बैंगन हैं...भरवाँ बनाकर छुट्टी करो ना! अगली बार जैसा होगा देख लेंगे। हैंऽऽऽजी!

अम्मी : (लम्बी साँस लेकर) चलिए यह भी अच्छा है।

अब्बू : (दबे स्वर में) पर उसके लिए अमचूर की ज़रूरत होगी!

नन्नु : अब ऐसा भी कुछ ज़रूरी नहीं। टमाटर हैं ना! हैंऽऽऽजी!

अम्मी : (पौधों की तरफ नज़रें घुमाती हुईं) हाँ, हाँ, टमाटर तो खूब हैं!

नन्नु : बस फिर हो जाएगा काम!

अब्बू : (नन्नु के स्वर में स्वर मिलाते हुए) ठीक है। आज भरवाँ बैंगन पका लेते हैं। अचारी और दही बैंगन अगली दफे।

(निर्णय के बाद वे आपस में बातें करते धीरे-धीरे चले जा रहे हैं। अब्बू भी जा रहे हैं, लेकिन अचानक जैसे कुछ याद आता है। मुड़कर देखते हैं। मिट्ठू, मिस नायला के पास बैठ बातें कर रही है। अब्बू मंच के कोने में छिपकर खड़े हैं और उन्हें बात करता देख रहे हैं।)

(अमरूद के नीचे खड़ी मिस नायला जुगाली कर रही है। मिट्ठू उसकी गर्दन से अपनी गर्दन सटाए चुपचाप बैठी है।)

मिस नायला : में-में-में..

मिट्ठू रानी, मिट्ठू रानी
क्यों गुमसुम हो आज
ना खेल रही, ना बोल रही
कुछ तो है इसमें राज़!

मिट्ठू : (उदासी से) कोई राज़ नहीं मिस नायला। सब अपनी-अपनी पसन्द बता रहे थे। किसी ने मुझसे नहीं पूछा।

मिस नायला : हाँ, यह तो गलत बात है। (एक लम्बी साँस भरकर) पता है पिछली दफे बड़ी सुन्दर भिण्डियाँ फली थीं। ताज़ी और हरी भिण्डियाँ। मैंने कितनी बार कहा कि भई ज़रा-सा तो चख लेने दो, पर तुम्हारी नन्नु ने एक भी भिण्डी मुझे नहीं खाने दी। उलटा मेरी रस्सी छोटी कर खूँटे से कस दी।

मिट्ठू : पता है, काम करवाने हों तो सब आवाज़ें लगाते हैं। (अब्बू की नकल करते हुए) मिट्ठू, मैं कॉपियाँ जाँच रहा हूँ, ज़रा पौधों को पानी दे दो बच्चा! (अम्मी की नकल करते हुए) रानी बेटी, मैं पढ़ रही हूँ, गैस की नॉब बन्द कर दो ना!

(फिर नन्नु की नकल करते हुए) ऐ मेरी लाडो, ज़रा पान का डिब्बा थमाना मुझे! (अब अपनी आवाज़ में) पर, जब बैंगन पकाने हों तो किसी ने नहीं पूछा।

मिस नायला : देख लो, ये दुनिया ऐसी ही मतलबी है। हमारी पॉटी की तो खाद बनाकर पौधों में इस्तेमाल कर ली। पर क्या मजाल जो झूठमूठ का भी मुझसे पूछा हो! खैर...तुम उदास न हो मिट्ठू!

मिट्ठू : उदासी की तो बात है न नायला। कोई हम बच्चों को इस लायक नहीं समझता कि हमारी भी राय ली जाए। अम्मी को नाटक करना कितना पसन्द था। लेकिन किसी ने उनकी मर्ज़ी नहीं पूछी, क्योंकि वो बच्ची थीं ना! बच्चों से भला कौन पूछता है कि उन्हें क्या अच्छा लगता है और क्या नहीं? (थोड़ा रुकती है) अम्मी ने भी तो मुझसे नहीं पूछा। बच्चे बड़े हो जाते हैं तो बच्चों को भूल जाते हैं ना!

मिस नायला : में-में-में! तुम्हें क्या पसन्द है मिट्ठू?

मिट्ठू : मुझे तो बैंगन के पकौड़े बहुत पसन्द हैं। (कुछ देर चुप रहने के बाद) पता है, मैं क्या करने वाली हूँ?

मिस नायला : क्या?

मिट्ठू : (मुस्कराकर नहीं में सिर हिलाती है) इम्म–हम्म! सोचो-सोचो...(फिर हँसती है। शरारत से उसकी आँखें चमक रही हैं।)

मिस नायला : (रूठकर) जाओ, फिर मैं भी नहीं बताऊँगी कि मैं क्या करने वाली हूँ?

मिट्ठू : (मिट्ठू नायला को थपथपाते हुए उसकी रस्सी खोल देती है) अच्छा बाबा! लो, खोल दी तुम्हारी रस्सी। तुमसे भला क्या छिपेगा!

(मिट्ठू अपना स्कूल बैग लेकर बैंगन की क्यारियों की तरफ जा रही है। मिस नायला भी उसके पीछे-पीछे पौधों के पास जा रही है। उस हिस्से में अँधेरा है। कुछ देर में मिट्ठू बैग सम्हालते वापस आ रही है। मिस नायला मुँह चलाती हुई उसके पीछे-पीछे लौट रही है। मिट्ठू मिस नायला की रस्सी खूँटे से कस रही है। तभी अब्बू बीच मंच पर आ रहे हैं।)

अब्बू : अब रात होने वाली है बच्चा...तुम आँगन में क्या कर रही हो?

मिट्ठू : (हड़बड़ाकर पीछे मुड़ती है) कुछ नहीं अब्बू...कुछ भी नहीं...मैं तो मिस नायला की रस्सी कस रही थी बस!

(मिट्ठू चुपचाप खड़ी रहती है। अब्बू पास आकर रुकते हैं। फिर घुटनों पर बैठ जाते हैं। मिट्ठू की दोनों हथेलियाँ थामकर बोल रहे हैं।)

अब्बू : कोई बात है? कुछ कहना है, तो बोलो मिट्ठू!

(मिट्ठू कुछ कहने वाली होकर चुप हो जाती है। नहीं में सिर हिलाती है।)

मिट्ठू : नहीं अब्बू, कोई बात नहीं है!

(अब्बू गौर से मिट्ठू को देखते हैं। मिट्ठू के बालों में सूखी घास का तिनका अटका है।)

अब्बू : (तिनका साफ करते हुए) पक्का?

(मिट्ठू हाँ में सिर हिला देती है।)

अब्बू : (खड़े होकर) अच्छा...ठीक है। भीतर चलो। अब मच्छर लगेंगे यहाँ।

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

दृश्य–8

घर का आँगन। दोपहर से पहले का वक्त है। मंच पर नन्नु का प्रवेश। वे धीरे-धीरे चलती हुई कुर्सी तक आती हैं। घुटनों पर हाथ रखते हुए कुर्सी पर बैठती हैं। मेज़ पर चश्मा और अखबार रखा है। चश्मा आँखों पर लगाकर वे अखबार पढ़ रही हैं। तभी मिट्ठू हाथ में प्लास्टिक की डलिया लिए हुए आती है। मिट्ठू के पीछे-पीछे अम्मी भी हैं।

मिट्ठू : (नन्नु से) नन्नु, आप अखबार पढ़ रही हैं?

नन्नु : (मुस्कराकर) हाँ बच्चा!

(मिट्ठू और अम्मी सब्ज़ी के पौधों की तरफ बढ़ रही हैं। अम्मी पौधों से टमाटर तोड़-तोड़कर मिट्ठू की डलिया में रख रही हैं।)

मिट्ठू : अम्मी वहाँ देखो! कोने में एक लाल टमाटर दिख रहा है।

अम्मी : हाँ! यहाँ पत्तों के नीचे भी एक है।

(डलिया टमाटर से भर गई। अम्मी फिर बैंगन के पौधों के पास गईं।)

अम्मी : (चौंकते हुए) अरे! यह किसने किया?

(अम्मी की आवाज़ सुनकर नन्नु अखबार से नज़रें हटाकर हड़बड़ाते हुए बोलती हैं।)

नन्नु : क्या किसने किया भई?

अम्मी : अरे अम्मा, देखिए तो ज़रा! हमारे सारे बैंगन किसी ने कतर लिए हैं। अधखाए बैंगन पौधों पर लटके हैं।

(नन्नु भागकर बैंगन के पौधों की तरफ जाती हैं और उन्हें ध्यान से देख रही हैं।)

नन्नु : सत्यानाश हो! ये तो सारे के सारे बैंगन किसी ने तोड़ लिए हैं। जो टूटे नहीं उन्हें अनाड़ियों की तरह कुतर दिया है।

अम्मी : ये कौन कर सकता है अम्मा?

नन्नु : (अधखाए कुतरे बैंगन दिखाते हुए) ये काम या तो किसी इन्सान का है...(फिर सोचते हुए) या फिर कोई जानवर भी तो कर सकता है...हैंऽऽऽजी!

अम्मी : हम्म...लेकिन जिस किसी ने किया है, बहुत बर्बादी की है। आखिर अपने घर में ऐसा कौन कर सकता है?

(दोनों चारों ओर नज़रें घुमाती हुईं मिस नायला की ओर देख रही हैं।)

नन्नु : (गुस्से में) मुझे लगता है, यह इस कमबख्त नायला का काम है। उसी का दिन भर मुँह चलता रहता है। हमेशा कुछ न कुछ चाहिए खाने को। चलो उससे पूछते हैं।

(दोनों बकरी की तरफ बढ़ रही हैं। तभी कुछ गिरने की आवाज़ होती है। अम्मी और नन्नु चौंककर आवाज़ की दिशा में देखते हैं। मिट्ठू के हाथ से डलिया गिर पड़ी है। टमाटर फर्श पर बिखर गए हैं। जो टमाटर अधिक पके थे, वे फट गए हैं।)

अम्मी : (नाराज़गी से) ओहो! मैंने कहा था न कि डलिया मेज़ पर रख दो।

(अम्मी और नन्नु दोनों मिलकर टमाटर इकट्ठा कर रही हैं। मिट्ठू मिस नायला के पास भागकर जाती है। मिस नायला सिर उठाकर में-में-में कर रही है।)

मिस नायला : में-में-में! तुमने जानबूझकर टमाटर की डलिया गिराई ना!

मिट्ठू : (फुसफुसाते हुए) मुझे डर लगा कि वे कहीं तुमसे पूछ न लें। और तुमने अगर कह दिया तो...!

मिस नायला : (मिमियाकर) अरे नहीं मिट्ठू! मैं किसी से कुछ नहीं बताने वाली।

(तभी पीछे से नन्नु की कड़कदार आवाज़ गूँजती है।)

नन्नु : (कड़क आवाज़ में) ऐऽऽऽ नायला! तूने बैंगन खाए हैं क्या?

मिस नायला : (ज़रा टेढ़ी आवाज़ में) हूँ-हूँऽऽऽ! तुम्हारे बैंगन तुम्हें मुबारक! हमारी तो हरी घास ही भली है। उससे फुर्सत पाऊँ तो बेरी के पत्ते न चबाऊँ, कि तुम्हारे बैंगन खाऊँ।

अम्मी : (हँसते हुए) मिस नायला, आपसे नाराज़ हैं अम्मी! पिछली बार आपने इसे भिण्डियाँ नहीं खाने दी थीं ना!

नन्नु : (चिढ़कर) दफा करो इसे!

नन्नु : (रोबीली आवाज़ में) ऐऽऽऽ फ़्लफ़ी! तूने तो नहीं खा लिए बैंगन?

(फ़्लफ़ी कुछ नहीं कहता। वह हड्डी से खेलने में व्यस्त है।)

नन्नु : (गुस्से से) ऐ फ़्लफ़ी, मेरी बात सुन रहा है कि नहीं?

(अब फ़्लफ़ी हड्डी छोड़कर नन्नु की ओर देखने लगा।)

नन्नु : तूने खाए हैं क्या बैंगन?

फ़्लफ़ी : (हड्डी से गोश्त का आखिरी कतरा चूसते हुए) बैंगन यानी एग प्लांट। हाँ, यही तो। वो एग जैसा गोल तो होता है पर एग नहीं। इतना तो मुझे मालूम है। वैसे मेरे इतने बुरे दिन नहीं आए नन्नु कि मैं स्वादिष्ट हड्डियों को छोड़कर तुम्हारे बैंगन कुतरकर खाऊँगा।

नन्नु :	(नाराज़ होते हुए) ये फ़्लफ़ी ना...दिन ब दिन बातूनी होता जा रहा है। सीधा नहीं बोल सकता कि नहीं कुतरे। इतनी गोल-गोल बातें क्यों करता है?
	(फ़्लफ़ी कू-कू करता हुआ मुस्कराता है।)
नन्नु :	मिस नायला ने नहीं खाए, फ़्लफ़ी को पसन्द नहीं, कल कोई बाहर से भी नहीं आया। तो आखिर बैंगन कुतरे किसने? हैंऽऽऽजी!
अम्मी :	कहीं यह बन्दर का काम तो नहीं अम्मा?
नन्नु :	नहीं-नहीं, बन्दर तो कई दिनों से इधर आए ही नहीं। तो भला वे कैसे कुतर सकते हैं।
	(नन्नु और अम्मी दोनों गहरी सोच में डूबे दिख रहे हैं। नन्नु इधर-उधर देखती आँगन का मुआयना कर रही हैं।)
नन्नु :	ये मिट्ठू के अब्बा नहीं दिख रहे? कहाँ हैं? उनसे पूछते हैं कि क्या उन्हें बैंगनों के बारे में कुछ पता है?
अम्मी :	वो तो किचिन में हैं। कह रहे थे कि आज उन्हें किसी स्पेशल डिश की तैयारी करनी है।
	(तभी दरवाज़े की घण्टी बजती है। मिट्ठू के दोस्त खेलने आए हैं।)
गैब्रियल :	मिट्ठू, ओ मिट्ठू!!
मिट्ठू :	(भागकर दरवाज़े की तरफ जाती है) अरे गैब्रियल, पूनम, सुखमनी...तुम लोग।
गैब्रियल, पूनम व सुखमनी :	(सभी एक साथ) हम तुम्हारे साथ खेलने आए हैं मिट्ठू।
	(मिट्ठू एक नज़र नन्नु और अम्मी को देखती है। दोनों अपनी बातचीत में मशगूल हैं। मिट्ठू कुछ सोचती है।)

मिट्ठू : ठीक है। अन्दर आ जाओ। चलो खेलते हैं।

(बच्चे गोला बनाकर बैठ जाते हैं। सभी सिर झुकाए ज़मीन की ओर देख रहे हैं। उन्हें इधर-उधर देखने की मनाही है। पूनम हाथ में रूमाल लेकर उनके चारों ओर चक्कर लगाते हुए कह रही है)

पूनम : बम्बई से चिट्ठी आई
रास्ते में गिर गई
किसी ने देखा है

बच्चे : (एक स्वर में) नहीं।

(पूनम फिर से 'बम्बई से चिट्ठी आई' वाली पंक्तियाँ दुहराती है। फिर रुक जाती है। मिट्ठू नन्नु की ओर कनखियों से देख रही है।)

पूनम : मिट्ठू ये चीटिंग है। तुम्हें गोले के अन्दर देखना है।

मिट्ठू : ओह, सॉरी! सॉरी! (वह वापस ज़मीन की ओर देख रही है।)

(पूनम फिर से वही पंक्तियाँ दोहराती है। सभी कहते हैं – नहीं। ऐसा दो-तीन बार होता है। फिर वह गैब्रियल के पीछे चुपके से रूमाल रख देती है। गैब्रियल को पता नहीं चलता। पूनम 'बम्बई से चिट्ठी आई' बोलते हुए दूसरे चक्कर में उसके पास आकर उसकी पीठ पर 'धप्प' से मारकर भागती है। गैब्रियल देखता है कि उसके पीछे रूमाल रखा हुआ है। वह रूमाल उठाकर झट से पूनम के पीछे दौड़ता है। पूनम तेज़ी से भागती हुई गैब्रियल की जगह बैठ जाती है। अब गैब्रियल बोलना शुरू करता है – 'बम्बई से चिट्ठी आई, रास्ते में गिर गई'...खेल चलता रहता है।)

(मंच के दूसरे भाग में नन्नु और अम्मी की बातचीत हो रही है।)

नन्नु : (खेलते हुए बच्चों को तिरछी नज़रों से देखते हुए) ये बच्चे कल भी खेलने आए थे क्या?

अम्मी : हाँ...आए तो थे अम्मा। पर आप ये क्यों पूछ रही हैं?

नन्नु : (दबी ज़बान में) कहीं उन्होंने तो बैंगन नहीं तोड़े?

अम्मी : क्या अम्मा आप भी...भला ये बच्चे क्यों बैंगन तोड़ने लगे?

नन्नु : लो भई! इसमें कौन-सी मुश्किल है...हैंऽऽऽजी! बच्चे हैं! बच्चों का तो काम ही है शरारत करना! ज़रा पूछो उनसे कहीं ये उनकी शरारत तो नहीं...हैंऽऽऽजी!

अम्मी : मैं तो नहीं जा रही पूछने...आप ही पूछ लो!

(तभी अब्बू स्टेज पर आते हैं।)

अब्बू : (पसीना पोंछते हुए) ओफ्फो! आज बहुत गर्मी है।

अम्मी : हाँ, गर्मी तो है। बहुत गर्मी है। तुम इतनी देर से किचिन में थे ना...डिश बन गई तुम्हारी?

अब्बू : हाँ...तैयारियाँ तो लगभग सारी हो गईं हैं।

नन्नु : देखो ज़रा, अपने आँगन के बैंगन गायब हैं। अधखाए कुतरे बैंगन लटके हैं। हैंऽऽऽजी!

अब्बू : (सब्ज़ियों की ओर देखते हुए) ओहो! यह किसने किया?

नन्नु : वही तो नहीं समझ आ रहा कि यह किसकी करामात हो सकती है? खैर तुम अपनी डिश बनाओ। हैंऽऽऽजी!

अब्बू : वह तो बन ही जाएगी...पर पहले यह तो पता चले कि बैंगन कहाँ गए?

नन्नु : (बेज़ारी से) अरे खाक डालो इन मुए बैंगनों पर...हैंऽऽऽजी! जाने कहाँ गायब हो गए? हैंऽऽऽजी!!

(अम्मी धीरे से कुहनी मारकर नन्नु को इशारा करती हैं। नन्नु को जैसे कुछ याद आया। वे बच्चों के पास चली आती हैं।)

नन्नु : (खखारकर गला साफ करते हुए) हैंऽऽऽजी! तो खेल रहे हो तुम लोग!

बच्चे : (एक साथ) हाँ नन्नु!

नन्नु : अच्छा है। खेलने-कूदने से तो शरीर की अच्छी कसरत होती है। शरीर स्वस्थ रहता है। वैसे तुम सब हरी सब्ज़ियाँ, फल वगैरह तो खाते हो ना?

बच्चे : (फिर से एक साथ) हाँ नन्नु! हम फल-सब्ज़ियाँ खाते हैं।

नन्नु : कौन-कौन से फल-सब्ज़ियाँ?

बच्चे : (एक साथ गिनवाते हैं) आम, अमरूद, केला, पपीता, गाजर, टमाटर, गोभी, भिण्डी।

नन्नु : और बैंगन...?

बच्चे : हाँ...हाँ...बैंगन भी!

(मिट्ठू चुप हो जाती है। वह अजीब नज़रों से नन्नु को देख रही है।)

नन्नु : ये तो बहुत अच्छी बात है...हैंऽऽऽजी! जिन सब्ज़ियों और पौधों को हम खाते हैं उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए, उनकी देखभाल करनी चाहिए...हैंऽऽऽजी!

(बच्चे हाँ में सिर हिलाते हैं। मिट्ठू उठकर खड़ी हो जाती है। वह नाराज़गी से नन्नु को देख रही है।)

नन्नु : हमारे आँगन से कल किसी ने बैंगन तोड़ लिए हैं...तुम लोगों ने किसी को बैंगन तोड़ते देखा था क्या?

बच्चे : (एक साथ) नहीं, नहीं, नन्नु! हमने तो किसी को नहीं देखा!

मिट्ठू : (नाराज़गी से) आप यह बात मेरे दोस्तों से क्यों पूछ रही हैं नन्नु?

नन्नु : अरे भई! मैं तो बस ज़रा...

मिट्ठू : मेरे दोस्तों से ये सब मत पूछिए। मुझे अच्छा नहीं लगता।

अब्बू : (आगे बढ़कर) ये क्या बात हुई मिट्ठू! नन्नु बड़ी हैं, पूछ सकती हैं...तुमसे, तुम्हारे दोस्तों से...हम सभी से।

मिट्ठू : फिर भी...मुझे अच्छा नहीं लगता।

अब्बू : क्यों अच्छा नहीं लगता?

मिट्ठू : क्योंकि...(कहकर रुक जाती है। थोड़ा परेशान है।)

अब्बू : क्योंकि क्या बच्चा? बताओ?

मिट्ठू : क्योंकि इन्होंने बैंगन नहीं तोड़े हैं।

अब्बू : तो किसने तोड़े हैं?

मिट्ठू : बैंगन...बैंगन (कसमसाती है। परेशानी से इधर-उधर देख रही है)। वो सारे बैंगन मैंने तोड़े हैं।

बच्चे और नन्नु : (चौंककर) ऐंऽऽऽ!

अम्मी : (हैरानी से) अरे! पर क्यों तोड़े तुमने बैंगन?

(मिट्ठू कुछ नहीं बोलती। अब्बू प्यार से मिट्ठू के कन्धे पर हाथ रखते हैं। मिट्ठू अब्बू को पकड़ लेती है।)

अम्मी : (उलझन भरी आवाज़ में) बोलो मिट्ठू...तुमने बैंगन क्यों तोड़े? और तुमने उन बैंगनों का किया क्या?

मिट्ठू : (धीमी आवाज़ में) कुछ नहीं किया, बस रखे हैं अपने बैग में।

(कोई कुछ नहीं कहता। अब्बू आँगन से चले जाते हैं। मिट्ठू अपना बैग लेकर आती है। वह बैग खोलकर कुछ देख रही है और परेशान लग रही है।)

मिट्ठू : अम्मी, मैंने बैग में ही तो रखे थे बैंगन। कहाँ गए?

(अम्मी और नन्नु पास आ जाते हैं। दोनों बैग में देखते हैं। मिस नायला और फ़्लफ़ी भी साथ आ गए हैं।)

नन्नु :	परेशान न हो! आराम से एक बार और देखो...हैंऽऽऽजी!
	(तीनों फिर से बैग में ढूँढते हैं। कुछ नहीं मिलता। तभी एक बड़ी-सी ट्रे लेकर अब्बू आँगन में आते हैं।)
अब्बू :	हाँ, तो साहिबे मेह्रबान! पेश-ए-खिद्मत हैं बैंगन के पकौड़े!
नन्नु व अम्मी :	(एक साथ) ऐंऽऽऽ! बैंगन के पकौड़े! इसका मतलब अब्बू की मिलीभगत से ये सब हुआ है।
अब्बू :	(मिट्ठू को देखकर शरारत से दोनों पलकें झपकाते हैं और मुस्कराते हैं) एक तरह से हाँ भी...और नहीं भी।
नन्नु :	और कोई बम फोड़ना हो, तो बाप-बेटी मिलकर अभी फोड़ दो। आज तो जैसे सस्पेंस भरा दिन रहा।
	(सब हँस पड़ते हैं।)
अम्मी :	पर मिट्ठू ने बताया नहीं कि उसने बैंगन क्यों कतरे?
अब्बू :	(मिट्ठू के मुँह में एक पकौड़ा रखते हुए) अब सभी ने तो अपनी-अपनी योजना बता दी कि बैंगन कैसे खाए जाएँगे...पर मिट्ठू से किसी ने पूछा ही नहीं। वैसे बैंगनों का सबसे ज़्यादा इन्तज़ार तो मिट्ठू ने किया था...और इस काम में मिट्ठू का पूरा साथ दिया है उसकी प्यारी नायला ने...हैंऽऽऽना!
	(मिस नायला में-में-में करती है।)
नन्नु :	ओह! तो ये बात है। हैंऽऽऽजी!
फ़्लफ़ी :	(नन्नु की नकल उतारते हुए) हैंऽऽऽजी! आखिर बच्चों से भी पूछना चाहिए! हैंऽऽऽजी!
नन्नु, अब्बू व अम्मी :	(एक साथ) बिलकुल! बच्चों से ही पूछना चाहिए! हैंऽऽऽजी!

(चारों बच्चे एक साथ मंच पर आगे आते हैं। मिलकर कोरस में एक कविता गाते हैं।)

बच्चे : इतनी बड़ी दुनिया बच्चों के लिए बनाते हैं
इतनी बड़ी दुनिया बच्चों के लिए सजाते हैं
सबकुछ तुम्हारे लिए तो है, हमसे ऐसा बतलाते हैं
फिर छोटी-छोटी चीज़ों में हमें भूल जाते हैं
हमसे आखिर क्यों नहीं पूछते...हम क्या चाहते हैं?

अब्बू : चलो भई, चलो! जल्दी-जल्दी बैंगन के पकौड़ों की दावत उड़ाते हैं।

नन्नु : बिलकुल...हैंऽऽऽजी! (एक पकौड़ा लेती हैं।)

सभी : (एक साथ) हैंऽऽऽजी! हैंऽऽऽजी!

(सभी ज़ोर से साथ में हँसते हैं।)

मंच पर अँधेरा हो जाता है।

समाप्त

फँस गया पेचा!

(नाटक)

दीप्ति

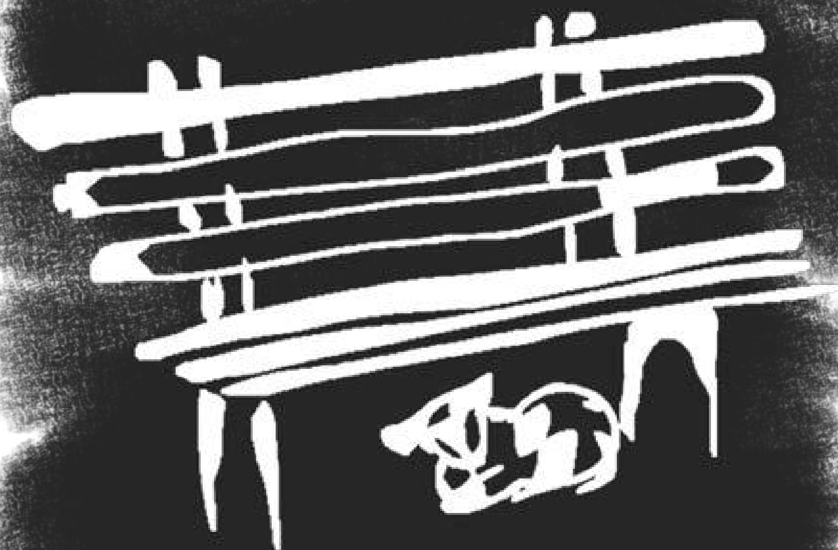

एकलव्य

आभार

मैं शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ अपने मम्मी-पापा का, जिन्होंने मेरी अभिरुचियों का सम्मान किया और हमेशा आगे बढ़ने का अवसर दिया। मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ शुभा और मनमोहन की, जिन्होंने रचनात्मक यात्रा में सदा मेरा मार्गदर्शन किया। और आखिर में, हमेशा मेरी हौसलाअफ़ज़ाई और सहयोग करने के लिए प्रिय राजकुमार का भी बहुत-बहुत शुक्रिया।

नाटक के बारे में

यह नाटक विशेष तौर पर किशोर-किशोरियों के मनोगत उतार-चढ़ाव और आत्मसंघर्ष पर केन्द्रित है। किशोरावस्था में बच्चे अनेक बार ऐसी उधेड़बुन से गुज़रते हैं, जहाँ वे खुद को उलझनों, परेशानी व बेचैनी से घिरा हुआ और असहाय पाते हैं। ऐसी परिस्थिति में वे किस प्रकार व्यवहार करते हैं और कैसे उन हालातों से उबरने की कोशिश करते हैं, यही यह नाटक दर्शकों के सामने प्रस्तुत करता है और दर्शकों को सोच-विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस नाटक की परिकल्पना में इसके प्राथमिक दर्शक किशोर उम्र के लड़के-लड़कियाँ, अभिभावक और टीचर हैं। इस नाटक के ज़रिए इन सबसे संवाद करने की कोशिश की गई है।

मंचन सम्बन्धी दिशा-निर्देश

इस नाटक का स्वरूप सहभागी है। सहभागी रंगमंच (Participatory Theatre) रंगमंच का एक रूप है, जिसमें प्रस्तुति करने वाले कलाकार दर्शकों को नाटक में चल रहे विमर्श और चर्चा में सीधे तौर पर शामिल कर लेते हैं। नाटक में चल रही विभिन्न परिस्थितियों और पात्रों के मनोभावों के ईर्द-गिर्द दर्शकों को सहभागिता करने का मौका मिलता है। हमारे जीवन में विचारधाराओं, विभिन्न तरह की मान्यताओं, जीवन के प्रति अलग-अलग नज़रियों और सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के चलते अनेक तरह के मतभेद उपजते हैं। सहभागी रंगमंच वास्तविक जीवन की परिस्थितियों को रचकर दर्शकों को इसे नए नज़रिए से देखने, समझने और मतभेदों पर संवाद करने का मौका देता है। इसमें दर्शकों की सक्रिय भागीदारी रहती है।

इस नाटक में नाटक के पात्र बीच-बीच में दर्शकों से संवाद करेंगे। नाटक में ऐसी जगहें सुनिश्चित की गई हैं जहाँ पात्र दर्शकों से बातचीत कर उनकी राय जानेंगे, उनसे सुझाव लेंगे और चर्चा करेंगे। इसका मकसद दर्शकों को पात्रों की स्थिति में ले जाकर के यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करना है कि उस परिस्थिति में वे खुद कैसा व्यवहार करते। जहाँ-जहाँ दर्शकों से संवाद हो रहा है वहाँ चर्चा संचालित करने वाले पात्र को कोशिश करना है कि चर्चा मुद्दे पर ही केन्द्रित रहे और अलग-अलग दर्शकों को भागीदारी करने का मौका मिल पाए। साथ ही यह ध्यान देने की भी ज़रूरत है कि विभिन्न प्रकार के नज़रिए, सवाल और सुझाव दर्शकों के बीच से आ पाएँ।

चर्चा को सुचारु और व्यवस्थित ढंग से चलाने की ज़रूरत भी होगी ताकि नाटक का प्रवाह प्रभावित ना हो और उसे उसी ऊर्जा व तीव्रता से आगे बढ़ाया जा सके। चर्चा संचालित करने वाले पात्र

के लिए यह एक तरह की चुनौती है और अत्यन्त महत्वपूर्ण भी, तभी नाटक और चर्चा एक तारतम्य में चल पाएँगे। नाटक में जहाँ-जहाँ चर्चा होनी है उन जगहों पर बातचीत किस दिशा में ले जानी है वो बिन्दु नाटक में रेखांकित कर दिए गए हैं। एक और बात, जो अभिनेता मंच पर चरित्र निभा रहे हैं, उनके अलावा बाकी अभिनेता हर दृश्य में कोरस की भूमिका में रह सकते हैं। कोरस को गुरदास मान नामक पात्र लीड करेंगे।

प्रिय रंगकर्मी दोस्त राजेश को समर्पित।

– दीप्ति

पात्र-परिचय

आशीष :	उम्र 15 साल। विद्यार्थी।
राधेश्याम :	दुकानदार।
गुरदास मान :	उम्र 45 साल। बस कंडक्टर।
निर्मला :	उम्र 16 साल। विद्यार्थी।
प्रतिछाया :	निर्मला का अन्तर्मन।
पिता :	उम्र 45 साल। निर्मला के पिता।
माँ :	उम्र 40 साल। निर्मला की माँ। गृहणी।
निशा :	उम्र 20 साल। विद्यार्थी।
नेहा :	उम्र 16 साल। विद्यार्थी।
सुलभमणि त्रिपाठी :	उम्र 45 साल। प्रोफेसर। निशा व नेहा के पिता।
कोरस :	सभी अभिनेता।

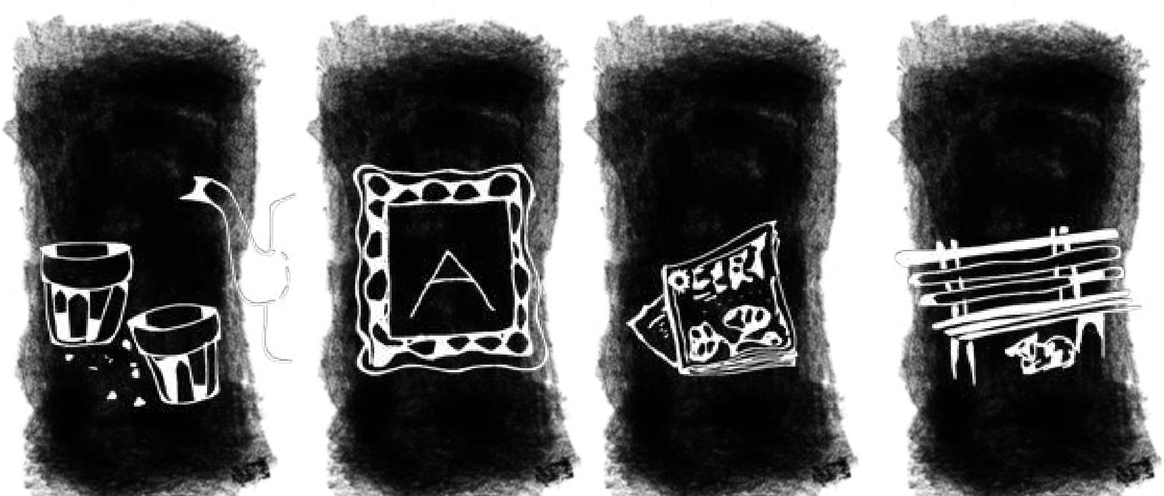

कोरस का मंच पर गाते हुए प्रवेश

गीत : दिल पर मुश्किल पड़े जो भारी
होती महसूस बड़ी लाचारी
व्यूह में फँसे दिमाग का घोड़ा
मन-दर्पण पर पड़े हथौड़ा

उठे सवाल हैं उमड़-घुमड़कर
दिल को दबोचें टाइट पकड़कर
उत्तर बिन कहीं चैन ना पाऊँ
चक्कर आए टक्कर खाऊँ

कभी हैं दिखती सत्तर राहें
कौन सही ये समझ ना पाऊँ
कभी घेरता स्याह अँधेरा
कहीं कोई उम्मीद ना पाऊँ
कैसे अपनी राह बनाऊँ
किधर से आया, किधर को जाऊँ!!

कोरस का मंच से गाते हुए प्रस्थान

दृश्य-1

दोपहर का वक्त। बस स्टैण्ड का दृश्य। बसों के हार्न और आने-जाने की आवाज़ें। आशीष एक बैंच पर घुटनों के बीच सिर छिपाए परेशान हाल में बैठा है। साइड में स्कूल बैग रखा है। उसके आसपास 4-5 चाय के खाली गिलास रखे हैं। पास ही चाय का एक खोखा है, जिस पर बिस्कुट, चिप्स, पानी की बोतल आदि चीज़ें रखी हैं। सवारियाँ आ-जा रही हैं। बस कंडक्टर गुरदास मान का गमछे से मुँह पोंछते हुए प्रवेश। सीधा चाय की दुकान की तरफ बढ़ता है और आशीष के सामने से गुज़रते हुए उसकी तरफ देखता है। चाय की दुकान पर पहुँचता है।

गुरदास मान : (चायवाले से) एक चाय बना भाई राधेश्याम। (लड़के के आसपास रखे गिलासों को गिनता है।) 1-2-3-4-5-6...छह कप चाय। (हैरानी से) आधा दर्जन चाय! (लड़के की तरफ इशारा करते हुए) भाई राधेश्याम, ये तो मेरा भी उस्ताद है।

राधेश्याम : 4-5 घण्टे से यहाँ बैठा है, अकेला। हर आधे घण्टे बाद उठकर आता है, चाय लेता है और फिर वहीं घुटनों में सिर डालकर बैठ जाता है।

गुरदास मान : मतलब?

राधेश्याम : मुझे तो कुछ गड़बड़ लग रही है।

गुरदास मान : (लड़के की तरफ देखता है।) लग तो मुझे भी रही है। (सोचते हुए लड़के को आवाज़ लगाता है) हाँ भई! कहाँ जाएगा?

(आशीष घुटने में सिर डाले बैठा रहता है। कोई जवाब नहीं देता।)

गुरदास मान : ओ पुत्तर! कहाँ जाएगा?

(आशीष अब भी नहीं सुनता।)

(गुरदास मान आशीष के पास जाकर, सीटी बजाकर, कंडक्टर के अन्दाज़ में बोलता है) जींद, नरवाना, खनौरी, संगरूर, मलेरकोटला। कहाँ जाएगा भई?

(आशीष गर्दन ऊपर उठाकर देखता है, लेकिन कोई जवाब नहीं देता।)

(गुरदास मान आशीष के कन्धे पर हाथ रखते हुए) पुत्तर क्या बात है?

(आशीष बैठने की मुद्रा बदलता है। बैंच से पैर नीचे करके, ज़मीन में नज़रें गड़ा लेता है, कोई जवाब नहीं देता।)

गुरदास मान : (प्यार से) पुत्तर, सब ठीक तो है!

आशीष : (मुश्किल से मुँह खोलता है, नीचे ज़मीन में नज़रें गड़ाए हुए ही बोलता है) क्या ही फर्क पड़ता है?

गुरदास मान : ऐसे क्यों बोलता है काके? (चायवाले को आवाज़ लगाता है) राधेश्याम दो चाय और एक बिस्कुट का पैकेट। (लड़के से) बात क्या है?

आशीष : सब बर्बाद हो गया।

गुरदास मान : ऐसा क्या हो गया?

आशीष : मुझसे सब चौपट हो गया।

गुरदास मान : (जैसे सब समझ गया हो।) गर्लफ्रेंड का चक्कर है क्या?

आशीष : (सोचते हुए) मम्मी...पापा...(गहरी साँस छोड़ता है।)

गुरदास मान : अच्छा...माँ-बाप ने कूट दिया?

आशीष : (गुरदास मान की तरफ ध्यान दिए बगैर अपनी ही धुन में बोलता जाता है) असल में सारी गलती मेरी ही है। मुझे कुछ नहीं आता। मैं कुछ कर ही नहीं सकता। मैं हूँ ही नालायक, निकम्मा, निखट्टू!

गुरदास मान : ओए, हुआ क्या है? मामला क्या है?

(आशीष कोई जवाब नहीं देता और फिर से घुटनों में सिर देकर बैठ जाता है। गुरदास मान उसकी तरफ चाय बढ़ाने की कोशिश करता है, फिर अनमने से नीचे रख देता है। अपने गिलास से एक घूँट चाय पीकर दर्शकों से मुखातिब होकर)

गुरदास मान : भई, मुझे तो समझ नहीं आ रहा? आपको कुछ समझ आया कि आखिर मामला क्या है? (एक दर्शक की तरफ इशारा करते हुए) आपको कुछ अन्दाज़ा लगा?

(यहाँ गुरदास मान दर्शकों को चर्चा में शामिल करेगा। दर्शक अपने-अपने अनुभव के अनुसार अनुमान लगाएँगे कि मामला क्या हो सकता है। इसका मकसद यह है कि दर्शक अपने-अपने अनुभव और सन्दर्भों के अनुसार उन परिस्थितियों को बीच में ला पाएँ जिनमें कोई किशोर इस मनःस्थिति में फँस सकता है। उदाहरण के तौर पर यह मान लें कि दर्शकों से उन परिस्थितियों की लिस्ट बनवा रहे हैं। इसे तेज़ी से चलाएँ और ज़्यादा लम्बा ना खींचे। इसी बीच दर्शकों की प्रतिक्रियाओं और अजीबोगरीब अनुमानों से झुँझलाकर आशीष अचानक उठकर ज़ोर से कहता है...)

आशीष : मैं 11वीं में फेल हो गया हूँ!

कोरस का मंच पर अलाप लेते हुए प्रवेश

गीत : हो...
होहो...
होहोहो...
फेऽऽऽल
हो गया फेल
धक्के खाता होगा, पैसे उड़ाता होगा
संगत खराब होगी, लानत कमाता होगा
त्यागा सद्‌कर्म है, आती नहीं शर्म है
माँ-बाप की कमाई पे गुलछर्रे उड़ाता होगा
ठेलम ठेल, धक्कम पेल, बना दो रेल
इसकी कसो नकेल!!

कोरस का मंच से प्रस्थान

दृश्य-2

दोपहर का वक्त। मंच पर एक कोने पर ड्रेसिंग टेबल का फ्रेम रखा है। निर्मला दर्पण के सामने खड़ी है। दर्पण के दूसरी तरफ उसकी प्रतिछाया है। दूसरे अभिनेता को हूबहू निर्मला जैसी वेशभूषा देकर प्रतिछाया बनाया जाएगा जो दर्पण के दूसरी तरफ खड़ी होगी। निर्मला खुश है। उसके हाथ में रिपोर्ट कार्ड है।

निर्मला : (प्रतिछाया से) 'ए' ग्रेड आया है। पापा कितने खुश होंगे ना!

प्रतिछाया : (कटाक्ष करते हुए) पापा की परी!

निर्मला : हाँ, तो! हूँ पापा की परी! मुझे परियों की तरह जो रखते हैं। और कितना प्यार करते हैं!

(प्रतिछाया नाक-भौं सिकोड़ लेती है।)

(निर्मला के पिता का प्रवेश)

पिता : निर्मला! निर्मला!

निर्मला : आई पापा। (खुद से) थककर आए होंगे ठण्डा-ठण्डा शरबत बनाती हूँ उनके लिए।

(घर का ड्राइंग रूम वाला हिस्सा। पिता सामान रखते हैं। आराम की मुद्रा में बैठते हैं। फिर से निर्मला को आवाज़ लगाते हैं)

पिता : निर्मला! निर्मला!

(निर्मला तेज़ी से आती है। एक हाथ में शरबत का गिलास है और दूसरे हाथ में रिपोर्ट कार्ड। रिपोर्ट कार्ड को पीछे छिपाकर, शरबत का गिलास पिता की तरफ बढ़ा देती है।)

निर्मला : (प्यार से) पापा मैं आपके लिए...

पिता : (बीच में ही काटते हुए) कहाँ मर गई थी?

निर्मला : आपके लिए शरबत बना रही थी।

(निर्मला गिलास आगे करती है, पिता गिलास लेते हैं और पीने लगते हैं।)

आप थके होंगे ना...तो मैंने सोचा ठण्डा-ठण्डा शरबत बना दूँ।

(पिता चुपचाप शरबत पीते हैं।)

निर्मला : कैसा है, पापा?

(पिता कुछ जवाब नहीं देते। गिलास टेबल पर रखकर अन्दर चले जाते हैं। निर्मला हताश हो जाती है। उदास होकर फिर से दर्पण के सामने आकर खड़ी हो जाती है। उसके हाथ में रिपोर्ट कार्ड है।)

निर्मला : (अपना मूड बदलते हुए खुशी का अभिनय करते हुए) पापा मुझे देखकर मुस्कराए।

(प्रतिछाया ज़ोर से हँसती है।)

निर्मला : उन्होंने मुझे प्यार से देखा।

(प्रतिछाया और ज़ोर से हँसने लगती है।)

प्रतिछाया : (कटाक्ष के साथ) पापा की परी!

निर्मला : मैं झूठ क्यों बोलूँगी? उन्होंने मुझे सचमुच प्यार से देखा!

प्रतिछाया : अच्छा! चल ये बता उन्हें शरबत कैसा लगा? (ज़ोर से हँसती है।) रिपोर्ट कार्ड देखकर तो उनकी छाती गर्व से फूल गई होगी! (और ज़ोर से हँसने लगती है।)

निर्मला : (प्रतिछाया से) प्लीज़, अपनी बकवास बन्द करो। ये चुड़ैलों की तरह हँसना बन्द करो। प्लीज़...प्लीज़।

(प्रतिछाया हँसती रहती है और निर्मला दोनों हाथों से अपने कान बन्द कर लेती है।)

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

दृश्य-3

शाम का वक्त। मंच पर एक तरफ निशा बैठकर मधुरिमा जैसी कोई पत्रिका पढ़ रही है। मंच के दूसरे कोने पर नेहा मोबाइल पर फेसबुक देख रही है। निशा और नेहा बहने हैं। नेपथ्य से पिता सुलभमणि त्रिपाठी की आवाज़ आती है। मंच पर अँधेरा है।

सुलभमणि : (नेपथ्य से, बहुत ही प्यार भरी आवाज़ में) नन्ही परी! ओ मेरी नन्ही परी! गुड़िया रानी! ओऽऽऽ मेरी बिटिया! बेटी निशा...

(निशा पर प्रकाश आता है। निशा सुलभमणि त्रिपाठी द्वारा बोले जा रहे निर्देशों के हिसाब से एक ही जगह पर एक्शन करती है। याद रहे, गीत का टेम्पो टूटे नहीं। लय बनी रहे। इस गीत को नेपथ्य से सुलभमणि त्रिपाठी और निशा मंच से मिलकर गाते हैं। निशा सिर्फ 'जी पापाजी' ही कहेगी।)

गीत : निशु बेटा
जी पापाजी
इधर आओ
जी पापाजी
पानी लाओ
जी पापाजी
अखबार लाना
जी पापाजी
खाना बनाया
जी पापाजी

तुमने खाया
जी पापाजी
बरतन माँजे
जी पापाजी
चूल्हा-चौका
जी पापाजी
साफ-सफाई
जी पापाजी
अच्छी लड़की
जी पापाजी
शर्मीली-सी
जी पापाजी
गुड़िया जैसी
जी पापाजी
लाज रखोगी
जी पापाजी
इज़्ज़त रखना
जी पापाजी
खुद ना सोचो
जी पापाजी
सब सह लोगी
जी पापाजी
कुछ ना कहोगी
जी पापाजी
चुप ही रहोगी
जी पापाजी
प्यारी बिटिया
जी पापाजी
गुड़िया रानी
जी पापाजी
खुश तो हो ना
जी पापाजी!!

सुलभमणि : और वो नालायक क्या कर रही है?

(नेहा पर प्रकाश आता है।)

नेहा : हाय गाइज़! ये मैं हूँ। (दर्शकों की तरफ मोबाइल का कैमरा करते हुए) ये मेरे दोस्त हैं। और हमारी पॉअरी (पार्टी) हो रही है।

(म्यूजिक शुरू होता है। टिकटॉक पॉअरी सॉन्ग बजता है और नेहा मगन होकर नाचने लगती है। दूसरी तरफ निशा पत्रिका पढ़ रही है। शोर सुनकर पिता आते हैं। कुछ देर खड़े होकर बहुत ही हताश नज़रों से नेहा को देखते हैं। निशा की तरफ बहुत ही गर्व से एक नज़र देखते हैं। निशा जाकर म्यूजिक बन्द कर देती है। नेहा नाचना बन्द करके मुड़कर देखती है। सामने पिता खड़े हैं।)

सुलभमणि : (सहज और संयत स्वर में) सीखो कुछ अपनी बहन से! देखो उसे!

(नेहा मोबाइल बन्द करती है।)

सुलभमणि : (उपदेशात्मक ढंग से) बेटा...ये जो तुम्हारे हाथ में यंत्र है। ये वास्तविक जीवन की दिनचर्या और रोज़मर्रा के कार्यकलापों को सुगम बनाने हेतु है, ना कि एक आभासीय दुनिया में विचरण करते हुए सत्य से कोसों दूर चले जाने हेतु। क्यों इस आभासीय दुनिया में लुप्त हो मेरी बच्ची...

(नेहा कुछ बोलने की कोशिश करती है।)

सुलभमणि : (धाराप्रवाह बोलते हुए) वास्तविक जगत में जीओ! ये... यहाँ...ये कुर्सी, ये मेज़, ये तुम्हारी बहन निशु, ये घर, ये हमारा खुशहाल कुटुम्ब! ये है तुम्हारी वास्तविक दुनिया। ये है सत्य!

नेहा :	(व्यंग्य के साथ) अगर ये है 'सत्य' तो बहुत ही बकवास है। मुझे तो ये ज़्यादा 'वर्चुअल' लगता है। यहाँ किसी को किसी की कोई परवाह ही नहीं है।
सुलभमणि :	(सहजता से) भई, सब तो ठीक है! क्या समस्या है यहाँ? क्यों निशु बेटा, सब ठीक है ना!
निशा :	जी पापाजी।
	(नेहा सख्त नज़रों से निशा को देखती है।)
नेहा :	बस यही दिक्कत है। निशु...निशु...निशु...! किसी को परवाह नहीं कि इस घर में मैं भी हूँ। कभी मुझे कंसीडर किया है? मैं क्या सोचती हूँ? मेरा नज़रिया क्या है? कभी अप्रीशीएट किया है? बस अपनी चलाते रहते हैं।
निशा :	नेहा! ऐसे बात करते हैं पापाजी से?
सुलभमणि :	(निशा की तरफ इशारा करते हुए) देखो इसे! कितनी शालीन है। सीखो कुछ इससे!
नेहा :	(बेचैनी के साथ) बहन को देखो! बहन से सीखो! मुझे नहीं सीखना इससे कुछ भी! मुझे नहीं बनना किसी के जैसी! मैं जैसी हूँ, ठीक हूँ!
	मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

कोरस का मंच पर गाते हुए प्रवेश

गीत : फँसा है पेचा, टकराहट है
नई व्यवस्था की आहट है
उलझनों से गुज़र रहे हैं
सवालों से उलझ रहे हैं
कहीं पे खुला गगन झाँके है
कहीं पे छाई घबराहट है
फँसा है पेचा, टकराहट है!!

कोरस का मंच से गाते हुए प्रस्थान

दृश्य-4

आशीष और गुरदास मान बस अड्डे पर बैंच पर बैठे हैं। आशीष परेशान मुद्रा में है।

गुरदास मान : ओए, तू 11वीं में फेल हो गया? 11वीं में भी कोई फेल होता है भला? खोते! क्यों माँ-बाप के पैसे बर्बाद कर रहा है? नालायक!

आशीष : नहीं, मैं नालायक नहीं हूँ। मैं 10वीं में 'ए' ग्रेड से पास हुआ था।

गुरदास मानः झूठा! फिर 11वीं में फेल कैसे हो गया?

आशीष : 10वीं में अच्छा ग्रेड आया, तो पापा ने 11वीं में मेरा एडमिशन बहुत बड़े इंटरनेशनल स्कूल में करवा दिया।

गुरदास मान : (व्यंग्य से हँसते हुए) और तू इस वजह से फेल हो गया?

आशीष : हाँ! इसी वजह से फेल हो गया।

गुरदास मान : (हँसते हुए) ना...ना...मैं नहीं मानता। मान ही नहीं सकता। इस वजह से कोई कैसे फेल हो सकता है। बड़ा स्कूल, चंगे टीचर, बधिया पढ़ाई, बधिया माहौल। सबकुछ बधिया, तेरे तो और अच्छे नम्बर आने चाहिए थे।

आशीष : मुझे वहाँ कुछ समझ नहीं आता था। टीचर क्या पढ़ा रहे हैं कुछ पल्ले नहीं पड़ता था।

गुरदास मान : समझ नहीं आ रहा था तो टीचर से पूछता। एक बार पूछता, दो बार पूछता, तीन बार पूछता।

आशीष :	पूछा था शुरू में। लेकिन सब बच्चे हँसने लगते थे।
गुरदास मान :	क्यों?
आशीष :	स्कूल में हिन्दी अलाउड नहीं है ना। रीसेस में भी हिन्दी नहीं बोल सकते। एक बार मैथ टीचर क्लास में थिअरम करा रहे थे। मुझे समझ नहीं आया। मैंने कहा (गलत उच्चारण में), "सर आई डिडन्ट अंडरस्टैंड। कैन यू प्लीज़ रिपीट फॉर मी? हाऊ यू रिज़ाल्व्ड द सम?" सब बच्चे हँसने लगे।
गुरदास मान :	तो बच्चों पे क्यों ध्यान देते हो? समझना तो टीचर से है ना!
आशीष :	टीचर भी मैथ की थिअरम समझाने की बजाय अँग्रेज़ी का लेक्चर देने लगे। मैंने कई बार कोशिश की। लेकिन जब भी बोलता सब मज़ाक उड़ाते और टीचर मेरी अँग्रेज़ी पर लेक्चर देने लगते। मैंने बोलना ही बन्द कर दिया। यहाँ तक कि मैंने बाथरूम जाना भी बन्द कर दिया कि टीचर से पर्मिशन लेने के लिए बोलना पड़ेगा और सब मेरा मज़ाक उड़ाएँगे। लेकिन किसी को कोई फर्क नहीं पड़ा। ना तो मेरी क्लास को और ना ही टीचर को।
गुरदास मान :	(चिन्ता के साथ) तूने अपने माँ-बाप को बताया?
आशीष :	नहीं।
गुरदास मान :	क्यों नहीं बताया? बताना चाहिए था।
आशीष :	मैं अपने मम्मी-पापा को बताते हुए झिझक रहा था। अगर वो मेरा ही दोष निकालने लगे तो? (रुआँसा होकर) मैं सोचता था मम्मी-पापा के लिए कुछ करूँगा। पढ़-लिखकर बड़ा होकर उन्हें हर तरह की सुख-सुविधाएँ दूँगा। लेकिन मैं तो 11वीं तक पास नहीं कर पाया। मैं किस मुँह से घर जाऊँ?
गुरदास मान :	तो तू घर से भागकर आया है?

आशीष : आज रिज़ल्ट आया तो मैं स्कूल से वापस घर गया ही नहीं।

गुरदास मान : मामला गम्भीर है। लेकिन पुत्तर, तेरे माँ-बाप परेशान हो रहे होंगे। तुझे घर जाना चाहिए।

आशीष : नहीं, मैं घर नहीं जा सकता। (आँखों में पानी आ जाता है।)

गुरदास मान : ओए, नहीं कूटेंगे तुझे। मैं उनसे बात करूँ? फोन नम्बर दे।

आशीष : मैं नहीं जाऊँगा घर।

गुरदास मान : ऐसा मत सोच बेटा। तू तो बड़ा समझदार है। इतनी बधिया और समझदारी की बातें कर रहा है। बेटा घर जा। बता कहाँ का है तू। मैं बस कंडक्टर को बोल दूँगा वो तुझे ले जाएगा।

आशीष : (झुँझलाकर) जाइए आप यहाँ से। आपको क्या मतलब? मैं जाऊँ या ना जाऊँ! अपने काम से काम रखो ना!

गुरदास मान : गुस्सा ना हो काके। इस समय इससे बड़ा कोई काम नहीं है। मेरी भी एक बेटी है तेरी ही उम्र की। क्या पता वो भी कोई बात मुझसे ना कर पा रही हो। खुदा ना खास्ता अगर वो किसी दिन ऐसी हालत में किसी बस अड्डे पर बैठी होगी तो? ना पुत्तर ना, घर जा।

(आशीष नज़रें जमीन में गड़ा लेता है और बिलकुल बुत बन जाता है। दर्शकों से) क्या आप में से कोई इसे समझा सकता है?

(दर्शकों को चर्चा में शामिल किया जाए। दर्शक आशीष को समझाने की कोशिश करेंगे। आम तौर पर शायद कहेंगे कि तेरे माँ-बाप परेशान हो रहे होंगे। उनके बारे में सोच। फेल हो गया तो क्या हुआ, अगली बार पास हो जाएगा आदि-आदि। गुरदास मान चर्चा को संचालित कराए। अगर कोई भी दर्शक स्कूल, स्कूल के माहौल और

शिक्षकों के व्यवहार पर टिप्पणी ना करे तो आशीष दर्शकों से ये सवाल पूछे।)

आशीष : क्या आप कभी फेल हुए हैं?
क्या आपको कभी अँग्रेज़ी की वजह से दिक्कत आई है?
क्या सारा कुसूर मेरा है?
क्या इसमें स्कूल का दोष नहीं?
क्या टीचरों का दोष नहीं?
क्या मज़ाक उड़ाने वाले स्टूडेंटों का दोष नहीं?
क्या उनको कोई समझाएगा?
क्या कोई मेरा ये एक साल वापस दे सकता है?

(इन्तज़ार करें। अगर कोई दर्शक चर्चा में शामिल होता है तो ठीक, वरना मंच पर खामोश कशमकश बनी रहने दें।)

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

कोरस का मंच पर गाते हुए प्रवेश

गीत : हल्का मन है बोझा भारी
सिर पे पड़ गया बिन तैयारी
तन में बिजली मन में हिलोरें
फिर भी छाई क्यों लाचारी
खुद से खुद की ये भिड़न्त कैसी
आत्मा पे क्यों चले कटारी!!

कोरस का मंच से गाते हुए प्रस्थान

दृश्य-5

निर्मला का घर। मंच पर एक तरफ दर्पण है। दूसरी तरफ सोफे पर बैठकर निर्मला के पिता अखबार पढ़ रहे हैं। निर्मला की माँ अपनी बहन को फोन मिला रही हैं। निर्मला फिर से रिपोर्ट कार्ड लेकर अपने पिता के पास जाती है।

निर्मला : (खुश होकर) पापा! मेरा रिज़ल्ट आ गया।

(पिता अखबार से ध्यान नहीं हटाते और निर्मला की तरफ देखते तक नहीं।)

निर्मलाः मैं 'ए' ग्रेड से पास हुई हूँ।

पिता : (नज़रअन्दाज़ करते हुए बिना अखबार से नज़र हटाए) हूँऽऽऽ। (निर्मला की माँ से) फोन मिला पाओगी या नहीं?

माँ : (हड़बड़ी में) मिल गया...मिल गया। हैलो बिमला जीजी!

(निर्मला उदास मुद्रा में वापस जाती है और दर्पण के सामने खड़ी होती है। प्रकाश केवल निर्मला और प्रतिछाया पर है।)

निर्मला : पता है पापा ने मुझे बहुत शाबाशी दी। कह रहे थे, "आए एम प्राउड ऑफ यू बेटा!" वो मुझे बहुत प्यार करते हैं।

प्रतिछाया : (हँसते हुए) किसे बहला रही हो? वो तुम्हें प्यार नहीं करते। इस बात को जितना जल्दी मान लो अच्छा है। परेशानी कम होगी।

(निर्मला कसमसा जाती है।)

निर्मला : परेशान तो मुझे तुम करती हो। अगर वो मुझे प्यार ना करते होते तो मेरे लिए इतनी सुन्दर ड्रेस क्यों लाते?

प्रतिछाया : (व्यंग्य से) कब लाए थे? कितने साल हो गए? और ये तो सभी माँ-बाप करते हैं। वो तुम्हारे लिए कपड़े नहीं लाएँगे तो कौन लाएगा? इसका मतलब ये थोड़े है कि वो तुम्हें प्यार करते हैं। वो बस अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर रहे हैं।

(प्रकाश माँ और पिता पर आता है।)

माँ : (गहरी साँस लेकर) लड़की तो पराया धन है बिमला जीजी। माँ-बाप को ज़िम्मेदारी निभानी पड़ती है। हाँ...हाँ... शादी तो 18 साल की होने के बाद ही करेंगे। 15 की हो गई है, हो ही गई समझो 18 की। लड़की की उम्र बढ़ते देर थोड़ी ना लगती है। अभी से ढूँढना शुरू करेंगे तब कहीं जाकर कोई ढंग का लड़का मिलेगा। बस एक अच्छा घर-परिवार मिल जाए। शादी हो जाए, तो हमारी ज़िम्मेदारी खत्म।

(पापा, जो अखबार पढ़ रहे हैं, ये बातें सुनकर नज़र उठाकर मम्मी की तरफ देखते हैं और हाँ में हाँ मिलाते हुए सिर हिलाते हैं।)

माँ : बस आप भी नज़र रखिए। सोचा आपके भी कान में बात डाल देती हूँ। ...जी ठीक है, ठीक है। बाय!

पिता : ये ठीक किया तुमने।

(प्रकाश निर्मला पर। निर्मला बहुत परेशान है। दुखी और परेशान दर्पण के सामने खड़ी है। जैसे टूट गई हो।)

निर्मला : (रोती हुई) क्या करूँ मैं ऐसा कि वो मुझे प्यार करने लगें। सब तो करती हूँ। मैंने बस यही तो चाहा है कि वो मुझे प्यार करें।

प्रतिछाया : मैं कह तो रही हूँ तुम उनकी बेटी नहीं हो। याद है चाचा कह रहे थे, "तुम उनकी बेटी नहीं हो। (चाचा के लहज़े में) हमारे घर तो लड़का हुआ था, ये तो नर्स ने बदल दिया।"

निर्मला : हाँ, मैं ही पागल हूँ जो ये नहीं समझी। (गुस्से में) अगर मैं उनकी बेटी नहीं हूँ तो क्यों रखा है मुझे अपने पास। मन करता है कि मैं खुद को...(इधर-इधर बौखलाई-सी देखती है) मैं खुद को...मैं खुद को...(अपने गाल पर थप्पड़ मारने लगती है।)

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

कोरस का मंच पर गाते हुए प्रवेश

गीत : कभी नहीं कोई हँसी ओ ठट्ठा
ज़िल्लत होती रोज़ इकट्ठा
पौधे को जब माली कोसे
पीला पड़ जाए रंगत खो दे
चटनी जैसे पीस रहे हैं
देते केवल टीस रहे हैं
कैसे घड़ियाँ बीत रही हैं
परियाँ छाती पीट रही हैं!!

कोरस का मंच से गाते हुए प्रस्थान

दृश्य-6

दोपहर का वक्त। नेहा का स्कूल बैग के साथ प्रवेश। बैग रखती है और टेबल से पानी की बोतल उठाकर पानी पीती है। इतने में निशा एक कमरे से झल्लाई हुई निकलती है। उसने एक कमीज़ पहन रखी है जो पीछे गले पर से बहुत ही अजीब ढंग से कटी हुई है। एक तरह का स्टाइलिश कट लग रहा है।

निशा : (गुस्से में) ये क्या किया है तूने? मेरा पूरा सूट खराब कर दिया। मेरा फेवरेट सूट था।

नेहा : मैंने क्या किया? मैंने तो कुछ नहीं किया।

निशा : तो ये कैसे हो गया? मुझे सब पता है ये तेरी ही करतूत है।

नेहा : कह रही हूँ ना, मैंने नहीं किया।

निशा : तो क्या कोई भूत कर गया।

नेहा : मुझे क्या पता?

निशा : देख नेहा, मुझे सब पता है, ये तूने ही किया है। सच-सच बता ये क्यों किया तूने? क्यों चिढ़ती है तू मुझसे?

नेहा : चिढ़ती नहीं, नफरत करती हूँ।

निशा : (गुस्से में) तेरी ज़ुबान बहुत चलती है। बिलकुल बिगड़ चुकी हो। बदतमीज़ कहीं की।

नेहा : मेरे साथ बकवास मत कर।

निशा : ऐसे बात करते हैं अपनी बड़ी बहन से। थप्पड़ लगेगा ना तो अक्ल ठिकाने आ जाएगी।

(निशा मारने के लिए आगे बढ़ती है, इतने में पिताजी सुलभमणि त्रिपाठी आ जाते हैं।)

सुलभमणि : निशु बेटा! हिंसा नहीं। तुम तो समझदार हो, संस्कारी हो। परस्पर मतभेदों को संवाद के ज़रिए हल करना चाहिए। तुम्हारा व्यक्तित्व तो एक उदाहरण है। तुम तो मिसाल हो।

संयम रखो
जी पापाजी
सहनशीलता
जी पापाजी
त्याग समर्पण
जी पापाजी
प्यारी बिटिया
जी पापाजी
गुड़िया रानी
जी पापाजी
सावधान
जी पापाजी
विश्राम
जी पापाजी!!

निशा : (वहीं रुक जाती है।) जी पापाजी।

पिता : (नेहा से) सीखो कुछ इससे।

मंच पर प्रकाश धीमा होता है।

दृश्य-7

नेहा अपने कमरे में बैठकर फेसबुक लाइव कर रही है। फेसबुक लाइव में वो अपनी कविता पढ़ती है। पिताजी सुलभमणि त्रिपाठी भी नेहा का फेसबुक लाइव देख रहे हैं। पिताजी ने फेसबुक पर स्वामीजी नाम से फेक एकाउंट बना रखा है। इससे वो अपनी बेटियों की ऑनलाइन निगरानी करते हैं। पिताजी नेहा को लाइव देखते हैं और उसके विडियो पर ठहर जाते हैं।

नेहा : हाय गाइज़! वेलकम टू माय फेसबुक पेज! कैसे हैं आप सब? आप ऐसे हैं या वैसे हैं, या जैसे भी हैं। (हँसती है) अच्छा, मैंने एक कविता लिखी है वो आपको सुनाती हूँ।

(कविता पढ़ती है)

मुझे नहीं बनना 'अच्छी लड़की' (कोट-अनकोट का निशान बनाते हुए)
मैं जो हूँ, सो मैं हूँ
मैं ना अच्छी हूँ
ना मैं बुरी हूँ
मैं बस मैं हूँ
मुझे नहीं बनना इसके जैसी, उसके जैसी
मुझे नहीं बनना 'अच्छी लड़की'

मेरी ड्रेसिंग पर कमेंट करने वाले
क्या सही है, क्या गलत बताने वाले
हिपोक्रेटिक, डबल स्टैंडर्ड

अपने गरेबाँ में झाँको तुम
मुझको मर्यादा बतलाने वाले
होते हो कौन तुम
तुम जैसे कहते हो वैसे
मुझे नहीं बनना 'अच्छी लड़की'

हाँ नेट पर सर्फिंग करती हूँ
खुलकर मैं हँसती हूँ
जब चाहूँ तब बाहर है जाना
शर्म नहीं है मेरा गहना
हाँ मैंने नहीं है सीखा
चुप रहना और सब सहना
मेरी ज़िन्दगी मेरी मर्ज़ी
मुझको जज करने वाले
मुझे चलन सिखाने वाले
होते हो कौन तुम

कभी कहते हो बनो ऐसी
कभी कहते हो बनो वैसी
दूसरों जैसी बनाने वाले
होते हो कौन तुम
उनको आइडियल किसने बनाया
मुझे नहीं बनना उनके जैसी
तुम्हारे तय किए अर्थों में
मुझे नहीं बनना 'अच्छी लड़की'

नहीं बनना दूसरों जैसी
मैं जो हूँ, सो मैं हूँ
मुझे नहीं बनना 'अच्छी लड़की'!

(पिताजी, जो फेसबुक लाइव देख रहे हैं, नेहा की कविता सुनकर विचलित हो जाते हैं और लाइव कमेंट करने लगते हैं।)

सुलभमणि : ये फेसबुक लाइव ही करती हो, या कुछ पढ़ती-लिखती भी हो?

नेहा : (पढ़ती है और जवाब देती है।) हे डूड, काम डाउन! सबसे पहले तो मेरी पढ़ाई की चिन्ता तुम मत करो। एंड फॉर योर काइंड इन्फॉर्मेशन आई एम ए मेरीटोरिअस स्टूडेंट। डॉन्ट बी जजमेंटल।

सुलभमणि : (मन ही मन) हाँ, पढाई में तो होशियार है। (फेसबुक पर बोल-बोलकर टाइप कर लिखते हुए) सिर्फ अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने से कुछ नहीं होता। जीवन में कोई तो आदर्श होना चाहिए जिससे हम प्रेरणा लें। तो एक आदर्श लड़की बनने में समस्या क्या है?

नेहा : डूड, क्या होती है आदर्श लड़की? किसने बनाया है ये अच्छी लड़की का क्राइटेरिया और चेकलिस्ट। क्यों दूसरों की पर्सनल लाइफ में दखल दे रहे हो यार। तुम्हारा कोई आदर्श है तो तुम बनो ना। दूसरों पर क्यों थोपते हो? यूज़ योर ब्रेन मैन एंड ऐक्सेप्ट एंड रिस्पेक्ट अदर्स पर्स्पेक्टिव्स!

सुलभमणि : (मन ही मन खुद से) यूज़ योर ब्रेन! मुझे दिमाग इस्तेमाल करने की नसीहत दे रही है। यार! मैं यार हूँ! (बोलकर टाइप करते हुए) अच्छे परिवार की लगती हो। अपने परिवार की गरिमा का तो खयाल रखो।

नेहा : यार तुम मेरे पिताजी मत बनो। यहाँ सोशल मीडिया पर भी बाप भरे पड़े हैं। लड़कियों को पिताजी थोक में मिलते हैं। सो मिस्टर स्वामीजी माइंड योर ओन बिज़नेस। मेरे परिवार की चिन्ता तुम मत करो। मेरा परिवार इतना अड़ियल और सड़ियल नहीं है। मेरे पिताजी एक बढ़िया इन्सान हैं। ये अलग बात है हमारे पॉइंट ऑफ व्यू थोड़े अलग हैं।

सुलभमणि : व्यक्तित्व निर्माण एक अहम कार्य है। आदर्श आचरण वाले व्यक्तित्वों का अनुसरण करने में क्या बुराई है? व्यक्तित्व सुदृढ़ ही होता है।

नेहा : (जोड़-जोड़कर पढ़ते हुए) व्य-क्ति-त्व सु-दृ-ढ़...यार तुमने अपनी डीपी तक तो फर्ज़ी लगा रखी है। ये क्या हनुमान की फोटो लगा रखी है। तुम तो व्यक्तित्व की बात ही मत करो।

सुलभमणि : अच्छे आदर्श और आचरण का अनुसरण सब करते हैं।

नेहा : ज़रूरी तो नहीं जो सब करते हैं वो मैं भी करूँ। तुम्हारी और मेरी अच्छे की डेफिनेशन अलग हो सकती है।

सुलभमणि : देखो ज़रा खुद को। क्या बन गई हो? सीखो कुछ अपनी बहन से!

(सुलभमणि आवेश में लिख तो देते हैं, लेकिन तुरन्त डिलीट कर देते हैं। नेहा इतनी देर में पढ़ चुकी होती है।)

नेहा : (मन में) सीखो कुछ अपनी बहन से! (फोन के कैमेरा पे जल्दबाजी में) ओके गाइज़! अब इस फेसबुक लाइव को यहीं रोकते हैं। मेरे पेज को लाइक करें, अगर पसन्द आए तो वीडियो शेयर करें और कविता आपको कैसी लगी, मुझे कमेंट करके बताएँ!

(नेहा जल्दी से मोबाइल छोड़कर बाहर आती है और देखती है, पिताजी जल्दबाजी में फेसबुक से एग्ज़िट कर रहे हैं और सकपकाए हुए हैं। वो समझ जाती है कि पिताजी ही कमेंट कर रहे थे।)

नेहा : पापा...आप, स्वामीजी? आई कान्ट बिलीव! मेरी ऑनलाइन जासूसी करते हो आप!

सुलभमणि :	(झेंपकर) जासूसी नहीं करता। जानकारी रखता हूँ। प्रत्येक अभिभावक का यह कर्तव्य है कि वो अपनी सन्तानों की गतिविधियों की जानकारी रखें। वरना प्रतिष्ठा का सर्वनाश होते देर नहीं लगती। जैसे तुम आज हमारे सम्मान और प्रतिष्ठा को आभासीय लोक में चकनाचूर कर रही हो।
नेहा :	ऐसा क्या कर दिया मैंने? मैं कोई और नहीं बनना चाहती। इससे आपकी प्रतिष्ठा और सम्मान धूल हो गई। क्या मेरी पर्सनैलिटी डिस्ट्राय करके ही आपकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। आखिर आपकी प्रतिष्ठा को मेरे रीयल सेल्फ से दुश्मनी क्या है?
सुलभमणि :	दुश्मनी है। ज़रा देखो अपने चाल-चरित्र को। हैं कहीं कोई शालीनता? क्या माँ-बाप कहीं मुँह दिखाने लायक बचे हैं।
नेहा :	(सदमा लगता है) चाल-चरित्र...तो आपको लगता है मैं करेक्टरलेस हूँ।
सुलभमणि :	(सकपका जाते हैं) ऐसा कब कहा मैंने? मेरा मतलब...मेरा मतलब...पता नहीं कैसे समझाऊँ तुम्हें?
नेहा :	मैं, मैं हूँ! आपके रिमोट से चलने वाला कोई रोबोट नहीं हूँ, जो सावधान-विश्राम करे! मुझे नहीं समझ आ रहा कि ये बात कैसे समझाऊँ आपको?
सुलभमणि :	संवाद करो। समझाओ मुझे। मुझसे बात करो, जैसे मैं तुमसे बात करता हूँ। संवाद करता हूँ।
नेहा :	(खीजकर) इसे आप संवाद कहते हैं?
सुलभमणि :	जब दो व्यक्ति परस्पर बात करते हैं उसी को संवाद कहते हैं। जो हम कर रहे हैं वो संवाद ही है।
नेहा :	एकतरफा ज्ञान पेलने को आप संवाद कहते हैं?

सुलभमणि : तो और क्या होता है संवाद। (दर्शकों से) क्या मैं सही ढंग से बात नहीं कर रहा? क्या मैं इससे संवाद नहीं कर रहा?

नेहा : (दर्शकों से) क्या डायलॉग ऐसे होता है? क्या कभी भी इन्होंने मेरे पर्स्पेक्टिव को समझने की कोशिश की है? जो मैं कहती हूँ उसे सुना है?

(नेहा और पिता सुलभमणि त्रिपाठी दर्शकों से चर्चा करेंगे। चर्चा इस विषय पर होगी कि अच्छा और सच्चा संवाद कैसे होता है। मसलन, एक-दूसरे को सुना भी जाए या सिर्फ अपनी-अपनी कहते रहें? संवाद सिर्फ बोलना नहीं होता बल्कि सुनना भी होता है। संवाद में एक-दूसरे के नज़रिए को समझना और खुद के नज़रिए के साथ निगोशिएट करना भी शामिल होता है, वगैरह-वगैरह। इसके इर्द-गिर्द चर्चा को चलाएँ और दर्शकों को शामिल करें। संवाद और संवाद की गुणवत्ता पर चर्चा हो। पिताजी और नेहा दोनों ही अपने-अपने नज़रिए से दर्शकों को शामिल करने की कोशिश करें। नेहा और सुलभमणि त्रिपाठी ये सवाल पूछ सकते हैं।)

सुलभमणि : क्या ऐसे की जाती है अपने माता-पिता से बात?

नेहा : क्या पैरेंट का अपने बच्चों को रोबोट समझना ठीक है, जिसे जैसे चाहो चलाओ? बच्चे क्या सोच रहे हैं, आपसे क्या कहना चाहते हैं, उनकी बातों को ना सुनना ठीक है?

सुलभमणि : क्या सन्तान को सही-गलत का एहसास करवाना गलत है? क्या बस मन की भड़ास निकालना संवाद है?

नेहा : तो क्या प्रवचन देना संवाद है?

(जब तक दर्शक चर्चा में हिस्सा ले रहे हैं चर्चा को चलाएँ। जब बातें रिपीट होने लगें या चर्चा एक जगह ठहर जाए तब गुरदास मान दर्शकों के बीच से निकलकर मंच पर पहुँचे।)

गुरदास मान : (ऊँची आवाज़ में दर्शकों के बीच से) सुनो! सुनो! सुनो! मैं कुछ कहूँ। (मंच पर आकर) सिर्फ बोलो ही मत बल्कि एक-दूसरे को सुनो भी!

सुलभमणि : ये सुनती है किसी की?

नेहा : और आपसे तो बात ही नहीं हो सकती!

(दोनों एक-दूसरे से पीठ फेरकर मुँह फुलाकर खड़े हो जाते हैं। गुरदास मान सुलभमणि के पास जाता है। समझाता है और नेहा से बात करने का इशारा करता है।)

सुलभमणि : (गुरदास मान को) इसका कुछ नहीं हो सकता!

(गुरदास मान नेहा के पास जाता है। समझाता है और सुलभमणि से बात करने का इशारा करता है।)

नेहा : इनका कुछ नहीं हो सकता!

गुरदास मान : (दोनों को सम्बोधित करके) अरे, होगा क्यों नहीं? सब होगा!

(गीत शुरू करते हैं। सभी अभिनेता एक-एक करके धीरे-धीरे मंच पर आ जाते हैं।)

गीत :

जब लगे उड़ गए हैं तोते
आँखें थक जाएँ रोते-रोते
नहीं हौसला कभी भी खोते
क्योंकि
सब रास्ते कभी बन्द नहीं होते
बोलो, बोलो, बोलो
दिल की गिरह को खोलो

दिल खोलें खुद भी खुल जाएँ
खुलकर सब बातें कर जाएँ
बातें करते ना शरमाएँ

जो भी दिल में सब कह जाएँ
ज़रा भी दिल में डर ना आए
दिल की बातें दिल से हो पाएँ
इसको इतना सहज बनाएँ
बस पानी-सा बहता जाए

यही इच्छा यही कामना है
यही सामने इसी से सामना है
बातों को हल्के में ना लेना
बातें करना दिल का मामला है
बातों में पूरा ध्यान भी चाहिए
सुनने वाले कान भी चाहिए
दिल को समझे वो इन्सान भी चाहिए

ना देरी बिन बात करो
बातों की शुरुआत करो
बाहर के दरवाज़े खोलो
भीतर भी पड़ताल करो!!

समाप्त

बैंगन नहीं आए! और फँस गया पेचा!

BAINGAN NAHIN AAYE! AUR PHANS GAYA PECHA!

लेखन:
उपासना - बैंगन नहीं आए!

दीप्ति - फँस गया पेचा!

डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादन: सीमा

ये नाटक क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत हैं जिसका पूरा विवरण https://creative-commons.org/licenses/by-ncnd/4.0/ पर उपलब्ध है।

इन नाटकों का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक से अवश्य सम्पर्क करें।

ThinkAtrs Play/Write Residency में विकसित

पराग इनिशिएटिव टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

पहला संस्करण: नवम्बर 2022 (3000 प्रतियाँ)
कागज़: 80 gsm मैपलिथो व 220 gsm एफबीबी (कवर)
ISBN: 978-93-91132-79-8
मूल्य: ₹ 110.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 255 5442

उपासना

उपासना कहानियाँ, कविताएँ, कथेतर साहित्य और अन्य विधाएँ लिखती हैं। विभिन्न आयु समूहों, जेण्डर और वर्ग के लिए लिखी जा रही सभी कहानियों में वह ऐसी कहानियाँ लिखती हैं जिन्हें अभी तक कहा नहीं गया है। बच्चों के लिए लिखना उनका शौक है। वह एक प्रशिक्षित पेंटर और शौकिया चित्रकार हैं।

उन्हें अपने पहले लघु कहानी संग्रह के लिए भारतीय ज्ञानपीठ के युवा लेखक पुरस्कार 2014 से नवाज़ा गया था। हिन्दी साहित्य के लिए उन्हें दो और प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले हैं। वह नियमित रूप से समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में विभिन्न आयु समूहों के लिए लिखती आ रही हैं, और लेखन कार्यशालाओं व सेमिनारों में भाग लेती हैं।

उन्होंने "एक ज़िन्दगी एक स्क्रिप्ट भर!!" (भारतीय ज्ञानपीठ) और "दरिया बन्दर कोट" (हिन्दुगम प्रकाशन) शीर्षक से दो लघु कहानी संग्रह प्रकाशित किए हैं और बच्चों के लिए एक उपन्यास "डेस्क पर लिखे नाम" (नेशनल बुक ट्रस्ट) प्रकाशित किया है।

दीप्ति

दीप्ति एक अभिनेत्री, थिएटर प्रैक्टिशनर और डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माता हैं। वह राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, टीआईई विंग, त्रिपुरा की पूर्व-छात्रा हैं। वह लगभग दो दशकों से इस क्षेत्र में काम कर रही हैं। उन्होंने बच्चों के लिए कई वर्कशॉप की हैं।

उनकी पहली डॉक्यूमेंट्री फिल्म *अनसंग करेज* जेण्डर भेदभाव पर थी। दीप्ति की हालिया डॉक्यूमेंट्री *उन्ने-सीजेरियन* को अमेरिकी दूतावास, मुम्बई में प्रदर्शित किया गया था।

दीप्ति हरियाणा ज्ञान विज्ञान समिति (एक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन) और हरियाणा विज्ञान मंच (बच्चों और समाज के साथ विज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाली एक राज्यव्यापी संस्था) की लम्बे समय से सदस्य हैं। 2018 से वह change.org फाउंडेशन प्रोग्राम, 'शी क्रिएट्स चेंज' की फेलो हैं।

धनिया तो हँस रही
टमाटर शरमाए
मूली भी खिल गई
पर, बैंगन नहीं आए
बैंगन नहीं आए, भई बैंगन नहीं आए!

पेश-ए-खिद्मत हैं दो नाटक। इनमें बच्चों की शरारत है तो किशोर-किशोरियों के मन की उथल-पुथल भी। ये नाटक न सिर्फ आपको हँसाएँगे बल्कि आपके अन्दर एक उधेड़बुन भी जगाएँगे।
इन नाटकों का लुत्फ उठाते हुए अपने भीतर के कलाकार को आवाज़ दीजिए!

एकलव्य

ThinkArts

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

मूल्य: ₹ 110.00
9 789391 132798